thearyasamaj.org

ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - २४ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र दिसम्बर (द्वितीय) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

मृत्यु शय्या पर स्वामी श्रद्धानन्द

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : २४
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: पौष कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., द्विवार्षिक-३९० रु., त्रिवार्षिक-५८० रु., आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा., त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा., आजीवन-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९४१ / ५९

परोपकारी

दिसम्बर द्वितीय २०१४

अनुक्रम

१. भस्मासुर बनते सन्त	सम्पादकीय	०४
२. तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि......	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१५
४. अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द....	सत्येन्द्रसिंह आर्य	१९
५. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२२
६. महर्षि दयानन्द और सृष्टि संवत्	निरुपण विद्यालंकार	२४
७. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	२८
८. श्री ज्ञानेन्द्र देव सूफी का संक्षिप्त....	रामकिशोर शर्मा	२९
९. संस्था-समाचार		३१
१०. वेदों की बातें	रामप्रसाद शर्मा	३६
११. संकेत - इशारे	सुकामा आर्या	३८
१२. जिज्ञासा समाधान-७७	आचार्य सोमदेव	३९
१३. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

भस्मासुर बनते सन्त

भारतीय परम्परा में धर्म का सम्बन्ध शान्ति के साथ है। जहाँ धर्म है वहाँ शान्ति और सुख अनिवार्य है परन्तु आज के वातावरण में धर्म अशान्ति और परस्पर संघर्ष का पर्याय होता जा रहा है। धार्मिक स्थान पर रहने वाले लोगों को साधु, सन्त आदि शब्दों से पहचाना जाता था। साधु का अर्थ ही अच्छा होता है, संस्कृत भाषा में जो दूसरों के कार्यों को सिद्ध करने में अपने जीवन की सार्थकता समझता है उसे ही साधु कहते हैं। जिसका स्वभाव शान्त है वही सन्त होता है। आजकल इन शब्दों का अर्थ ही बदल गया है, जो स्वार्थ सिद्ध करने में लगा है वह साधु है, जो अशान्ति फैला रहा है वह सन्त है। जो जनता को मूर्ख बना रहा है वह योगी है। पुराने समय में साधु लोग जिन स्थानों पर निवास करते थे उन स्थानों को आश्रम कहा जाता था। वहाँ जाकर सबको विश्राम मिलता था। वहाँ किसी के आने-जाने पर प्रतिबन्ध नहीं होता था, उनके यहाँ मनुष्य क्या, पशु-पक्षी भी निर्भय होकर विचरते थे। उनके निवास स्थान का गर्मी-सर्दी, शारीरिक कष्ट, पशुओं के द्वारा हानि न पहुँचे इतना ही उद्देश्य था। इसके लिए उन्हें न तो बड़े-बड़े महलों की आवश्यकता थी, न सुरक्षा के लिए किले जैसे आश्रम बनाने की जरूरत, न अपनी फौज, कमाण्डो रखने का झंझट। जब वैराग्य हो गया तो किसका भय, किससे द्वेष, फिर आश्रम की ऊँची-ऊँची दीवारें किसके भय से बनाई जायें।

आज सन्त वह है जो अशान्त हुआ घूम रहा है। ठग संन्यासी हो गया, विलासी-विरक्त कहला रहा है, यह सब क्यों हो रहा है? क्यों होने दिया जा रहा है? आज हमारे पास ऐसे बहुत उदाहरण हैं जिनसे इन दुर्घटनाओं के कारणों को समझ सकते हैं। सन्त रामपाल दास चौबीसों घण्टे दूरदर्शन और समाचार-पत्रों का विषय बना हुआ है। आज तात्कालिक समस्या के समाधान के रूप में सरकार ने उसे गिरफ्तार कर लिया परन्तु इससे समस्या का समाधान होने वाला नहीं है। यह समस्या सरकार और समाज की बनाई हुई है, यदि इसके कारणों पर विचार करके उसके समूल विनाश का प्रयास नहीं किया गया तो यह समस्या प्रतिदिन खड़ी रहेगी। केवल उसके नाम बदलते रहेंगे। कभी यह समस्या भिण्डरावाला के रूप में, कभी आसाराम बापू के रूप में, कभी राम-रहीम के रूप में, कभी रामपाल दास के रूप में। इन सन्तों में और चन्दन तस्कर वीरप्पन में भौतिक अन्तर इतना है कि एक आदमी डाकू बनकर डकैती करता है दूसरा सन्त या गुरु बनकर डकैती या ठगी करता है। एक जंगलों में छिपता है तो दूसरा नगरों में किलेनुमा महल बनाकर रहता है। एक बदनाम है और दूसरे की चरण वन्दना होती है। परिणाम दोनों का एक जैसा होता है। जब इनसे जनता का दु:ख बढ़ जाता है, सरकार के अस्तित्व पर संकट आता है तब दोनों को अपराधी मानकर पुलिस, फौज, प्रशासन उनको गिरफ्तार करने, दण्ड देने में जुट जाता है। इन दोनों के बनाने के लिए सरकार और समाज ही पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं।

रामपाल दास को सन्त किसने बनाया? समाज के सम्मानित समझे जाने वाले लोगों ने। रामपाल दास हरियाणा सरकार की सेवा में एक जूनियर इञ्जीनियर था, गबन के कारण उसे सरकारी नौकरी से निष्कासित कर दिया गया। वह आज इतना बड़ा सन्त बन बैठा। वह अपने को कबीर का अवतार मानता है। जब दुष्ट व्यक्ति धार्मिकता का आडम्बर करता है तो जनता को मूर्ख बनाता है। धर्म के क्षेत्र में भक्त सन्तों को बड़ा बनाने का कार्य करते हैं। रामपाल दास कबीरदासी मठ में रहते हुए अपने दुराचरण के कारण अपनी मण्डली में निन्दा का पात्र बना, इसके एक चेले ने इसकी पोल खोलते हुए एक पुस्तक लिखी 'शैतान बण्यो भगवान' इस पुस्तक से क्रोधित होकर रामपाल दास ने उसे गुण्डों से पिटवाया। उसने अपनी कहानी अपने परिचितों में अपने क्षेत्र के लोगों को सुनाई। रामपाल दास की दुष्टता से गाँव के लोग भी तंग थे, वहाँ की महिलाओं से दुर्व्यवहार की घटनाओं से ग्रामवासी उत्तेजित थे। आश्रम के पास खेती करने वालों के खेतों पर कब्जा करने के उसके प्रयास से वहाँ के किसान भी परेशान थे। सरकार में सन्त की पहुँच बढ़ गई थी, लोगों की सुनवाई नहीं हो रही थी, तब आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में ग्रामवासियों ने संघर्ष किया। सरकार को बाध्य होकर कार्यवाही करनी पड़ी। एक युवक का बलिदान भी हुआ। रामपाल दास को सरकार ने गिरफ्तार भी किया, वह जेल में भी रहा, जमानत पर छूटा, सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार को उसका आश्रम उसे लौटाने का निर्देश दिया। ग्रामीणों के लिए फिर संकट आ गया, रोष बढ़ता रहा, बलदेव जी

thearyasamaj.org

के नेतृत्व में फिर संघर्ष हुआ। इसमें तीन लोगों का बलिदान हुआ। रामपाल दास से आश्रम खाली कराया गया फिर उसने वही सब हिसार के बरवाला आश्रम में करना प्रारम्भ किया, आज उसी घटना का अगला दृश्य जनता के सामने है।

इस घटनाचक्र में रामपाल दास ने समाचार पत्र और दूरदर्शन के माध्यम से ऋषि दयानन्द को गालियाँ देना, पुस्तकों के उद्धरण को गलत तरीके से प्रस्तुत करना, समाचार पत्रों में बड़े-बड़े विज्ञापन देकर आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द की निन्दा करने का अभियान जारी रखा। आर्यसमाज ने अपने सीमित साधनों से उसका उत्तर देने का प्रयास किया परन्तु उसके साधनों के सामने यह बहुत स्वल्प था। जब मनुष्य का दुर्भाग्य आता है तो दुर्बुद्धि साथ लाता है। रामपाल दास अपने मुकद्दमे की पेशी पर जाने से बचता रहा और वह दिन आ गया जब न्यायालय ने किसी भी स्थिति में उसे गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत करने का आदेश दिया। एक सप्ताह तक पुलिस प्रयास करने पर भी उसे गिरफ्तार करने में सफल नहीं हो सकी तब आश्रम तोड़कर, बिजली, पानी बन्द कर उसे पकड़ने का प्रयास किया और १४ दिन बाद उसे गिरफ्तार किया जा सका।

इस घटना में विचारणीय बिन्दु है कि इसके लिए दोषी कौन है? क्या रामपाल दास दोषी है? इसका उत्तर है नहीं। क्या जनता दोषी है? इसका भी उत्तर है नहीं। फिर इसका दोषी कौन है? इसका उत्तर है सरकार, प्रशासन, पुलिस अधिकारी, राजनेता और समाज के धनी लोग इसके लिए उत्तरदायी हैं। जब समाज के लोग ऐसे व्यक्ति को माध्यम बनाकर अपने काम सिद्ध करते हैं तो वे ही लोग समाज में ऐसे लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं। इन बड़े सम्पन्न प्रतिष्ठित लोगों को इन साधुओं की पूजा करते देखते हैं तो सामान्य जनता इनके भँवरजाल में फंस जाती है। समाज में अधिकांश लोग आज भी धर्म, अधर्म, झूठ-सच इसका अन्तर करने में समर्थ नहीं है। वे तो किसी को भी इस स्थान पर सन्त की वेशभूषा में देखकर उस पर सहज विश्वास कर लेते हैं, अपना सबकुछ उसको सौंपने के लिए तैयार हो जाते हैं, यही कारण है कि इन धार्मिक ठगों के भक्तों, अनुयायियों की संख्या हजारों में नहीं, लाखों में पहुँच गई है। इनकी बढ़ती भीड़ लोगों को अपनी ओर इतना आकर्षित करती है कि सामान्य व्यक्ति उस भीड़ का हिस्सा बनकर अपने को धन्य समझ लेता है। भक्तों के धन से ये सन्त कुबेर बन जाते हैं, इनकी झोपड़ियाँ महलों में बदल जाती हैं। इनके भक्तों की भीड़ से समाज में इनका महत्त्व बढ़ता जाता है। पुलिस इनसे डरती है, सरकारी अधिकारी इनकी सेवा करते हैं, मन्त्री इनको प्रणाम करते हैं और निर्वाचन के समय इनके भक्तों के वोट प्राप्त करने के लोभ में इनके चरण छूकर आशीर्वाद लेते हैं। ऐसे में वे अपने को सर्वशक्तिमान् समझने लगें तो आश्चर्य की क्या बात है?

रामपाल दास के प्रसंग में भी यही कुछ हुआ है। रामपाल दास का बचाव पहले से सरकारी अधिकारी करते आ रहे हैं, पुलिस कमिश्नर का वक्तव्य ध्यान देने योग्य है, उन्होंने पत्रकारों से कहा कि पुलिस के दस प्रतिशत लोग रामपाल दास के प्रभाव में हैं, इसी कारण पुलिस को अपने कार्य में सफलता नहीं मिल रही। इस तथ्य की जानकारी मिलने पर कार्य-नीति बदली गई और अपरिचित पुलिस को इस कार्य में लगाया गया तब जाकर पुलिस को सफलता मिली। स्मरण रखने की बात है कि भूतपूर्व मुख्यमन्त्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा की पत्नी रामपाल दास के ट्रस्ट की ट्रस्टी है, यह भी समाचार पत्रों में आ चुका है। मनोहर लाल खट्टर नये मुख्यमन्त्री हैं, उन्हें प्रशासन को निर्देशित करने में कठिनाई है। यह स्वाभाविक है परन्तु मुख्यमन्त्री स्वयं रोहतक के रहने वाले हैं, अतः यह समझना चाहिए कि वे रामपाल दास और उसके साथ घटी घटनाओं से भलीभांति परिचित हैं फिर भी इस घटनाक्रम में लोगों को ऐसा लगा कि सरकार जानबूझकर कार्यवाही करने से बचना चाहती है। आलोचकों और पत्रकारों की दृष्टि में ऐसी सोच का ठोस कारण है, खट्टर सरकार ने रामपाल दास से चुनाव में उसका समर्थन माँगा था और भक्तों से भाजपा को मत देने की माँग की गई थी।

राजनीति में एक-एक मत का और मतदाता का मूल्य होता है। मतदाता मतदाता है, वह चोर है, डाकू है, सन्त है, दादा है, जिसके साथ जितने मत जुड़े हैं वह उतना ही महत्त्वपूर्ण है। ऐसी परिस्थिति में राजनेता भूल जाते हैं कि वह कौन है, उन्हें तो बस मतदाता की चरण-वन्दना करनी होती है। रामपाल दास के साथ-साथ भाजपा ने राम-रहीम बाबा का चुनाव में समर्थन लिया। उसके भक्तों के मत ही भाजपा को विजयी बनाने में समर्थ हुए, पिछले दिनों एक बड़े कांग्रेसी नेता ने स्वीकार किया कि कांग्रेस की हार का प्रमुख कारण, राम रहीम बाबा का भाजपा को समर्थन देना है। इस का समर्थन, कांग्रेस को भी चाहिए, चौटाला को भी चाहिए, फिर राजनीति में रहना है तो भाजपा कैसे पीछे

thearyasamaj.org

रह सकती है। बाबा राम रहीम के समर्थन का धन्यवाद मनोहर लाल खट्टर ने अपने मन्त्रीमण्डल के सहयोगियों के साथ बाबा के आश्रम में पहुँचकर चरण-वन्दना करके किया। ध्यान देने की बात है कि बाबा राम रहीम रामपाल दास से बड़ा बाबा है, उसके आश्रम में होने वाले अवैध कार्यों की जाँच पड़ताल करने का साहस पहली सरकारों में भी नहीं था वर्तमान सरकार में भी नहीं है। वहाँ पत्रकार की हत्या का प्रसंग बहुत चर्चित रहा है, समय-समय पर आलोचनायें होती हैं। सरकारें अपने स्वार्थ और दुर्बलता के कारण सार्थक कार्यवाही करने में समर्थ नहीं हो सकी हैं। जो भी कार्यवाही देखने में आई वे न्यायालय द्वारा की गई है। अभी बाबा राम रहीम के डेरे का एक वाद न्यायालय में लम्बित है। बाबा ने अपने अन्तरंग कार्यकर्त्ताओं को बड़ी संख्या में बलपूर्वक नपुंसक बना दिया जिससे अन्तरंग कार्यों में उनसे कोई बाधा नहीं पहुँचे। न्यायालय इस बात की जाँच कर रहा है। सरकार में यह साहस नहीं है कि आश्रम के विषय में आई शिकायतों की जाँच कर कार्यवाही कर सके।

बाबा लोग अपने कार्यक्रमों में राजनेताओं को बुलाकर अपना प्रभाव प्रदर्शित करते हैं और राजनेता उनके कार्यक्रमों में जाकर आशीर्वाद लेते हैं। इन बाबाओं में कई तो निपट मूर्ख होते हैं और इन बाबाओं के भक्तों की भीड़ में बड़े शिक्षाविद्, प्रशासक, राजनेता हाथ बांधे पंक्ति में खड़े रहते हैं। कुछ वर्ष पहले शेखावत मुख्यमन्त्री थे, आसाराम का जयपुर में कार्यक्रम था, आसाराम ने अनेक स्थानों से सिफारिश दबाव डालकर मुख्यमन्त्री को अपने कार्यक्रम में बुलाया था।

राजनेताओं को भीड़ ऐसे लुभाती है जैसे ठेका शराबियों को। फिर कौन, किसे दोष दे? आसाराम ने आश्रम बनाये, भूमि पर अवैध कब्जे किये, महिलाओं का शोषण किया, भक्तों के धन से धनपति बन बैठा, प्रायः करके हर बाबा-सन्त की यही कहानी है।

भिण्डरावाला की कहानी से इस देश के नेताओं ने कोई शिक्षा नहीं ली। इन्दिरा गाँधी ने उसे अपने विरोधियों को परास्त करने के लिए आगे किया था परन्तु भारत सरकार के लिए वह कितना बड़ा सिरदर्द बना और इन्दिरा गाँधी की हत्या का कारण बना। आजकल एक नहीं दर्जनों सन्त इसी कार्य में लगे हुए हैं, ये पाखण्ड फैलाकर जनता के विश्वास को दिन-रात लूटने में लगे हुए हैं। मोदी की जन-धन योजना तो सफल हो या न हो पर इन पाखण्डियों की जन-धन योजना शत-प्रतिशत सफल है। एक निर्मल बाबा, हरी-लाल चटनी खिलाकर लोगों का भाग्य बदल रहा है। कुमार स्वामी ब्रह्मर्षि बनकर बीज-मन्त्र दे रहा है और ऐसे लोगों क. इन राजनेताओं से खूब सहयोग और समर्थन मिलता है। दक्षिण का सोना स्वामी हो या नित्यानन्द स्वामी, सभी लोग जनता को मूर्ख बनाकर लूटते हैं और कामिनी काञ्चन के स्वामी बनते हैं, अपनी प्रवृत्तियों का स्वामित्व तो इन्हें न मिला और न ही मिलेगा।

इन सारी घटनाओं को देखने से एक बात साफ होती है कि जनता को समझदार और जागरूक किये बिना इसका सुधार सम्भव नहीं है। आर्यसमाज इन्हीं लोगों की ऐसी बातों का खण्डन करता है तो नासमझ लोग कहते हैं सभी को अपनी आस्था चुनने का अधिकार है, सबको अपने विचारों का प्रचार करने की स्वतन्त्रता है परन्तु आर्यसमाज भी तो विचार ही दे रहा है। क्या गलत बातों से सावधान करना, विचार का प्रचार करना नहीं है? क्योंकि गलत विचारों के निराकरण के बिना सद्‌विचारों को स्थान नहीं मिल सकता। रामपाल दास के दुष्कृत्यों के विरोध में आर्यसमाज ने आवाज उठाई, आन्दोलन किया, आज उसी का परिणाम है कि रामपाल दास का यथार्थ रूप जनता के सामने आ सका।

इस घटनाक्रम में बाबा की ओर से गोलीबारी में पुलिस वाले और कुछ लोग घायल हुए परन्तु पुलिस को गोली नहीं चलानी पड़ी। रामपाल दास को पुलिस ने गिरफ्तार किया या रामपाल दास ने समर्पण किया यह तो प्रशासन और सरकार की नीयत को बतायेगा। परन्तु एक दुर्घटना का अन्त हुआ। पुलिस को बधाई, ईश्वर का धन्यवाद। इस घटनाक्रम पर पञ्चतन्त्र की पंक्ति सटीक लगती है-

प्रथमस्तावदहं मूर्खो द्वितीयः पाशबन्धकः।
ततो राजा च मन्त्री च सर्वं वै मूर्खमण्डलम्॥

-धर्मवीर

छूट गये हैं पाप जिन के वे विद्वान् लोग अपनी विद्या के प्रकाश में जैसे ईश्वर के गुणों को देख के सत्य धर्माचारयुक्त होते हैं वैसे हम लोगों को भी होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.५

जैसे गुण के ग्रहण करने वाले उत्तम गुणवान् विद्वान् का सेवन करते हैं, वैसे न्याय करने में चतुर राजा का सेवन प्रजाजन करते हैं, इसी से परस्पर की प्रीति से सब की उन्नति होती है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.७

thearyasamaj.org

तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः -१

- स्वामी विष्वङ्

पिछले अंक का शेष भाग.....

इसलिए तप शब्द का प्रयोग योगशास्त्र ने जिस अर्थ में प्रयोग किया है उसी अर्थ में सबको ग्रहण करना चाहिए। शास्त्र व्यवस्था (विधान) करने के लिए होता है न कि व्यवस्था को बिगाड़ने के लिए होता है। इसलिए शास्त्र के अनुसार चल कर ही हम सब सुख को प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा अव्यवस्था में तो दु:ख ही मिलेगा। मनुष्य के मन में तप के सन्दर्भ में प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि तप के बिना योग सिद्ध नहीं हो सकता, ऐसा क्यों कहा है? क्या तप न करे तो क्या योग सिद्ध नहीं होता? हाँ, नहीं होता यह बात कह चुके हैं फिर क्यों पूछा जा रहा है? इसलिए पूछा जा रहा है कि आपने कहा योग सिद्ध नहीं होता, बिना तप के योग सिद्ध क्यों नहीं होता उसका कारण तो बताइये?

महर्षि वेदव्यास योग सिद्ध न होने का कारण बताते हुए कहते हैं-

अनादिकर्मक्लेशवासनाचित्रा प्रत्युपस्थितविषयजाला चाशुद्धिर्नान्तरेण तपः सम्भेदमापद्यते इति तपस उपादानम्।

अर्थात् तप का विधान इसलिए किया है कि बिना तप के मन में रहने वाली अशुद्धि छिन्न-भिन्न नहीं हो सकती है। क्यों? क्योंकि अनादिकाल से हम कर्म करते हुए आ रहे हैं और अनादि काल से राग, द्वेष आदि (अविद्या) हमारे साथ चली आ रही हैं। इसलिए कर्मों और अविद्या रूपी क्लेशों की वासनाएँ (संस्कार) भी अनादि काल से हमारे साथ चली आ रही हैं। यहाँ पर अनादि शब्द का अभिप्राय है जिसका कोई प्रारम्भ नहीं है सदा से चला आ रहा हो उसे अनादि कहते हैं। अनादि दो प्रकार के होते हैं एक स्वरूप से अनादि और दूसरा प्रवाह से अनादि। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ईश्वर, जीव व प्रकृति को स्वरूप से अनादि कहा है और "प्रवाह से अनादि- जो कार्य जगत्, जीव के कर्म और जो इनका संयोग वियोग हैं ये तीन परम्परा से अनादि हैं।" (आर्योद्देश्यरत्नमाला) इसलिए यहाँ पर कर्म, क्लेश व संस्कारों को परम्परा से अनादि कहा जा रहा है। कर्मों, क्लेशों व संस्कारों से मन गुँथा हुआ रहता है। कर्म, क्लेश, वासना रूपी अशुद्धि मन को बार-बार विषय समूहों (रूप, रस, गन्ध आदि) को उपस्थित करने वाली होती है अर्थात् विषय समुदाय की ओर मन को प्रवृत्त करती रहती है। इसलिए यह अशुद्धि बिना तप के छिन्न-भिन्न या शिथिल (ढीली) नहीं हो सकती अथवा नष्ट नहीं हो सकती। इसी कारण से तपस्या का ग्रहण क्रियायोग में किया गया है।

जहाँ तप के बिना योग सिद्ध नहीं होता वहाँ तप करते हुए महत्त्वपूर्ण सावधानी वर्तनी होगी। इसके लिए महर्षि वेदव्यास लिखते हैं कि-

तच्च चित्तप्रसादनमबाधमानमनेनाऽसेव्यमिति मन्यते।

अर्थात् योग-साधना करने वाले साधक को यह ध्यान रखकर चलना चाहिए कि वह जो तप किया जाना है यदि वह तप मन को प्रसन्न नहीं करता है, तो ऐसा तप से क्या लाभ? क्योंकि तप समाधि पाने के लिए किया जाता है और उस तप से मन अप्रसन्न (खिन्न) हो रहा हो, तो अप्रसन्न मन एकाग्र नहीं हो सकता। जब तक मन एकाग्र नहीं होता तब तक समाधि नहीं लग सकती। इसलिए जो तप समाधि के लिए किया जाये उस तप के कारण मन अप्रसन्न न हो, इसका सतत ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए '**चित्तप्रसादनम्**' कहा है अर्थात् मन को प्रसन्न रखते हुए तप करना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि अच्छे कार्यों को करते समय जो बाधाएँ सामने आती हैं, उनको सहन तो करना चाहिए परन्तु मन को प्रसन्न रखते हुए सहन करना चाहिए। यदि उन बाधाओं को सहन करते हुए मन खिन्न हो रहा हो, तो तप करने का कोई प्रयोजन नहीं रहता। इसलिए महर्षि ने सचेत किया है कि मन को खिन्न करते हुए तप न करें। जहाँ मन को प्रसन्न रखते हुए तप करना है वहाँ एक और सावधानी भी रखनी है कि तप करते हुए शरीर में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं होनी चाहिए। तप करते हुए शरीर में बाधा (किसी भी प्रकार की व्याधि उत्पन्न होने की स्थिति) हो रही हो, तो समाधि लगाने के लिए शरीर सहयोग नहीं दे पायेगा। इसलिए शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि उत्पन्न न हो, इसका ध्यान रखते हुए तप करना चाहिए।

महर्षि ने तप करते हुए दो सावधानियों की चर्चा की है। मन प्रसन्न रहे और शरीर में व्याधि उत्पन्न होने की स्थिति न आये। यहाँ पर योग-साधक को अत्यन्त सावधानी रखनी है कि तप भी हो और मन प्रसन्न रहे व शरीर में

thearyasamaj.org

बाधा न आये। प्रायः कुछ साधक तप (सहन करने) को और सावधानियों को परस्पर मिलाकर समन्वय नहीं कर पाते हैं। वे यह समझ नहीं पाते हैं कि तप करना चाहिए पर उनका आकर्षण सावधानियों पर विशेष रहता है और तप को गौण कर देते हैं। वे ऐसा मानते हैं कि अमुक विषय में तप (सहन) करने से मन खिन्न हो रहा है और शरीर में बाधा हो रही है, इसलिए उस विषय में तप करना ही छोड देते हैं। ऐसा कर-करके बहुत सारे विषयों में तप नहीं कर पाते हैं। प्रारम्भ में बड़े-बडे विषयों में तप करना छोड़ देते हैं और धीरे-धीरे छोटे-छोटे विषयों में तप करना छोड़ देते हैं। इसका परिणाम यह निकलता है कि उन्हें योग में जितनी गति प्राप्त होनी चाहिए उतनी गति नहीं हो पाती है। जब कभी उनसे कोई कहे, तो उनका उत्तर यह होता है कि जिसमें मन खिन्न होता हो उस तप को नहीं करना चाहिए और जिससे शरीर में सर्दी-गर्मी आदि लग रही हों उस तप को नहीं करना चाहिए। इस प्रकार का उत्तर देकर वे तप से तो बच जाते हैं परन्तु योग को सिद्ध नहीं कर पाते हैं। इसके विपरीत कुछ साधक ऐसे भी होते हैं जो तप को प्रधान बना लेते हैं और सावधानियों को गौण बना लेते हैं। वे शारीरिक तप इतना करते हैं जिससे शरीर तो योग के अयोग्य हो ही जाता है और मन भी प्रसन्न नहीं रहता और जबरन मन को प्रसन्न करने का दबाव-तनाव अपने आप पर देते हैं। उदाहरण के लिए सर्दी-गर्मी को सहन करना है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हिमालय में जाकर अतिशीत में कपड़े ही न पहनना और मई-जून में चारों ओर अग्नि जलाकर उसके बीच में बैठना। यह अति तप करना भी उचित नहीं है और न्यून तप (तप ही न करना) करना भी उचित नहीं है। इसलिए महर्षि कहते हैं कि तप को और सावधानियों को मिला कर समन्वय करते हुए तप करना चाहिए।

तप में द्वन्द्वों (सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि) को सहन करना होता है। तप करने से दु:ख मिलता है और उससे मन खिन्न होता है, शरीर को भी कष्ट होता है। यदि सावधानी रखते हैं तो तप नहीं होता और तप करते हैं तो सावधानियाँ नहीं रह पाती हैं। ऐसी स्थिति में क्या करें? इसका समाधान महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सरल शब्दों में किया है-

"....योगाभ्यास से शरीर को किञ्चित्-किञ्चित् पीड़ा देता हुआ अपने सब प्रयोजनों को सिद्ध करे।"

(संस्कारविधि वेदारम्भ संस्कार)

यहाँ पर महर्षि ने शरीर को थोड़ा-थोड़ा पीड़ा देने की बात कही है और पीड़ा किससे देनी है 'योगाभ्यास से' योगाभ्यास का यहाँ अभिप्राय 'तप' से है। इससे प्रत्येक योग-साधक को शिक्षा लेनी चाहिए कि तप अवश्य करना है। हाँ, सामर्थ्य से अधिक तप नहीं करना है। इसलिए थोड़ा-थोड़ा पीड़ा को सहन करते हुए अपने सामर्थ्य को बढ़ाते रहना चाहिए। जिस प्रकार से ज्ञान प्राप्त करने के सामर्थ्य को और उपासना करने के सामर्थ्य को बढ़ाते हैं उसी प्रकार तप करने के सामर्थ्य को भी बढ़ाना चाहिए। जिससे आगे चल कर तप को विशेष रूप से करने में सक्षम हो जायेंगे अर्थात् आज सामान्य विषयों में तप कर रहे हैं, तो भविष्य में बड़े-बड़े विषयों में तप हो पायेगा। उस स्थिति में बाधाएँ, बाधाएँ नहीं लगेंगी प्रसन्नता से बिना बाधा के तप उत्तम रीति से होगा। ऐसे तप को ही प्रत्येक योग-साधक को अपनाना चाहिए, ऐसा महर्षि पतञ्जलि एवं महर्षि वेदव्यास मानते हैं और ऐसा ही योगी लोग स्वीकार करते हैं।

उपरोक्त वर्णन से यह पता लगता है कि तप का कितना महत्त्व है। इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने क्रियायोग में तप का ग्रहण किया है। इस प्रकार से तप क्रियायोग का एक विभाग है उसीप्रकार स्वाध्याय भी क्रियायोग का दूसरा विभाग है। जिस प्रकार से तप के बिना योग सिद्ध नहीं होता उसी प्रकार स्वाध्याय के बिना 'मोक्ष' प्राप्त नहीं होता है।

इसलिए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

स्वाध्यायः प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं वा।

अर्थात् स्वाध्याय उसे कहते हैं जो मोक्ष (मुक्ति) को दिलाने वाले शास्त्रों का अध्ययन करना और प्रणव (ओ३म्) आदि पवित्र शब्दों, वाक्यों, मन्त्रों का जप करना है। यहाँ महर्षि ने स्वाध्याय शब्द के दो अर्थ दिये हैं जप करना और शास्त्रों का अध्ययन करना। पहले शास्त्र अध्ययन के सन्दर्भ में विचार करते हैं। महर्षि ने मोक्ष शास्त्रों का अध्ययन करना लिखा है, इसका अभिप्राय है कि मुक्ति दिलाने वाले जो भी शास्त्र होंगे, उन्हें पढ़ना चाहिए। मुक्ति का अर्थ है दु:खों से मुक्ति। जिस-जिस से दु:ख मिलता है उस-उस को जानना होगा। जानकारी के लिए पढ़ना होता है, पढ़कर के ही विधिवत् ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसलिए जो-जो शास्त्र दु:ख को दूर करने वाला हो उस-उस शास्त्र को पढ़ना ही स्वाध्याय कहलायेगा। दु:ख को दूर करने वाले शास्त्र दो प्रकार के हैं। एक प्रकार के शास्त्र ब्रह्माण्ड की

thearyasamaj.org

जानकारी देते हैं, जिन्हें भौतिक शास्त्र भी कहते हैं। जिनको पढ़कर मनुष्य संसार के सभी व्यवहारों को समुचित (न्याय) पूर्वक कर सकते हैं। दूसरे प्रकार के शास्त्र आत्मा व परमात्मा की जानकारी देते हैं, जिन्हें आध्यात्मिक शास्त्र भी कहते हैं। जिनको पढ़कर मनुष्य आन्तरिक जीवन के दुःखों को दूर करता है।

मनुष्य के जीवन में दो प्रकार के दुःख होते हैं एक बाह्य दुःख और दूसरा आन्तरिक दुःख। इन दोनों प्रकार के दुःखों को दूर करने वाले शास्त्रों को मोक्ष शास्त्र कहते हैं। कोई व्यक्ति यह न समझे कि आध्यात्मिक शास्त्र ही मोक्षशास्त्र हैं, क्योंकि दोनों प्रकार के दुःख दूर होने पर ही मोक्ष प्राप्त होता है। इसलिए दोनों प्रकार के शास्त्रों को पढ़ना मनुष्य का कर्त्तव्य है। यह विचार व्यक्ति विशेष के नहीं हैं। ये विचार वेद के हैं, वेद स्वयं कहता है-

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयंसह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।।

(यजुर्वेद ४०.११)

इस वेद मन्त्र का अभिप्राय यह है कि सम्भूति (कार्य जगत्) विनाश (कारण-प्रकृति) इन दोनों को एक साथ जो व्यक्ति जानता है। वह व्यक्ति कारण प्रकृति यानि विनाश के द्वारा अर्थात् कारण प्रकृति को जानने से मृत्यु से तरकर और सम्भूति के द्वारा अर्थात् कार्य जगत् को जानने से अमृत (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है। यजुर्वेद के इस मन्त्र में स्पष्ट रूप से भौतिक विद्या की चर्चा की है और इसी वेद के ४०वें अध्याय में १४वें मन्त्र में दोनों (भौतिक व आध्यात्मिक) विद्याओं की चर्चा की गई है। इसलिए दोनों प्रकार की विद्याओं को प्रस्तुत करने वाले शास्त्रों को पढ़ना ही स्वाध्याय का एक महत्त्वपूर्ण विभाग है। स्वाध्याय का दूसरा विभाग 'जप' है, जप क्रिया मनुष्य के कर्मों में अत्युत्तम महत्त्वपूर्ण कर्म है जो मनुष्य को समाधि तक पहुँचाने वाला है। बिना जप के मनुष्य ईश्वर की उपासना (ध्यान) नहीं कर पायेगा। इसलिए महर्षि ने जप को विशेष रूप से स्वाध्याय के अन्तरगत ग्रहण किया है।

जप की क्या विधि होती है इस सम्बन्ध में स्वयं महर्षि पतञ्जलि ने समाधि पाद के २७वें सूत्र में स्पष्ट किया है कि '**तस्य वाचकः प्रणवः**' अर्थात् परमेश्वर का मुख्य नाम प्रणव है और प्रणव को ही 'ओ३म्' कहते हैं। ओ३म् को प्रणव इसलिए कहते हैं कि जिससे परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट रूप से स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जाती है। इसलिए प्रणव को ओ३म् कहा जाता है और ओ३म् में इतना सामर्थ्य है कि परमेश्वर के सभी गुण, कर्म व स्वभाव ओ३म् के अन्तर्गत आ जाते हैं। इसलिए परमेश्वर का मुख्य निज नाम ओ३म् को कहा गया है। योगाभ्यासी परमेश्वर का जप करके परमेश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुरूप अपने गुण, कर्म व स्वभाव बना लेता है। यहाँ पर एक विशेष बात यह है कि जप केवल परमेश्वर का ही करना चाहिए। जप और ध्यान में थोड़ा अन्तर है। ध्यान परमेश्वर का और जीवात्मा व सत्व, रज, तम से लेकर पञ्चमहाभूतों तक किया जाता है। ध्यान के माध्यम से ही समाधि में प्रवेश किया जाता है। जप केवल परमेश्वर का इसलिए किया जाता है कि परमेश्वर का जप प्रतिदिन दोनों समय कर सके ऐसा ही विधान है। परन्तु पञ्च महाभूतों से लेकर सत्व, रज, तम व जीवात्मा तक पदार्थों का जप व ध्यान प्रति दिन दोनों समय करने का विधान नहीं है। इस कारण जप को ध्यान से अलग करके अन्तर किया है। हाँ, तात्त्विक दृष्टि से जप ध्यान के अन्तर्गत आ जाता है। इसके पीछे कारण यह ही है कि दोनों का परिणाम समाधि है। जप किस प्रकार करना चाहिए इस बात को लेकर महर्षि ने समाधि पाद में '**तज्जपस्तदर्थभावनम्**' सूत्र के माध्यम से स्पष्ट किया है। उसे उसी स्थान में विस्तार से समझ लेना चाहिए।

क्रियायोग में जिस प्रकार से तप व स्वाध्याय महत्त्वपूर्ण विभाग हैं उसीप्रकार ईश्वरप्रणिधान भी महत्त्वपूर्ण तीसरा विभाग है। महर्षि पतञ्जलि ने ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रिया को क्रियायोग में स्थन देकर यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर के उपकारों को जाने, समझे और माने। जिससे मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि का पूर्ण सदुपयोग करता हुआ ईश्वर साक्षात्कार कर सके। महर्षि वेदव्यास ने ईश्वरप्रणिधान की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि-

ईश्वरप्रणिधानं सर्वक्रियाणां परमगुरावर्पणं तत्फलसंन्यासो वा।

अर्थात् मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले कर्मों (जो मन, वाणी व शरीर से करने वाले सभी कर्मों) को परमेश्वर के प्रति समर्पित करना और उन कर्मों का लौकिक (सांसारिक) फल न चाहते हुए मोक्ष की इच्छा करना। इसके साथ प्रत्येक कर्म को करते हुए 'परमेश्वर मुझे देख, सुन व जान रहे हैं, मैं परमेश्वर की उपस्थिति में उपस्थित होकर कर्म कर रहा हूँ' ऐसी अनुभूति बनाये रखने को ईश्वरप्रणिधान कहते हैं। जिस प्रकार से दिन में दिन की और रात्रि में रात्रि की अनुभूति रखते हुए सभी कार्यों को करते हैं उसीप्रकार परमेश्वर की व्यापकता, सर्वज्ञता,

hearyasamaj.org

सर्वशक्तिमत्ता व न्यायकारिता को मन, बुद्धि व आत्मा में रखते हुए सभी कार्यों को करना चाहिए। जिससे परमेश्वर की अत्यन्त निकटता प्राप्त हो जायेगी।

चंचल मन वाले मनुष्य के लिए ईश्वरप्रणिधान का विधान करके महर्षि पतञ्जलि ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि मनुष्य पाप कर्मों से बच सके। बुरे कर्म इसलिए किये जाते हैं क्योंकि उन्हें देखने वाले कोई नहीं हों अथवा कोई उन्हें रोक नहीं सके। बलवान मनुष्य निर्बल मनुष्यों के समक्ष भी बुरे कर्म कर सकते हैं परन्तु बुरे कर्म करने वालों से अधिक बलवान उनके सामने आ जाये, तो नहीं कर पायेंगे परन्तु छिपकर कर सकते हैं। यदि मनुष्य यह जान ले कि बलवान मनुष्यों से तो छिप सकते हैं पर परमेश्वर से नहीं छिप सकते। इसलिए परमेश्वर के भय से मनुष्य बुरे कर्मों से बच सकते हैं। इसी कारण ईश्वरप्रणिधान का विधान किया है। ईश्वरप्रणिधान की परिभाषा में सभी कार्यों को करके ईश्वर को समर्पित करने की बात कही है। इसमें ईश्वर को समर्पित करने में कोई बात नहीं है परन्तु समर्पित करने के साथ-साथ यह भी बात कही गई है कि '**तत्फलसंन्यासो वा।**' अर्थात् उन किये हुए कर्मों का फल न चाहना यह बात समझ में इसलिए नहीं आ रही है कि कर्म किया ही इसलिए जाता है जिससे फल प्राप्त हो सके। यहाँ कहा जा रहा है कि फल ही न चाहना यह कैसे हो सकता है? 'फल का त्याग करना' यह अर्थ लिया जाये तो कोई भी ईश्वरप्रणिधान नहीं कर पायेगा। इसलिए ईश्वरप्रणिधान को अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए अन्यथा मनुष्य योग के नाम से डर कर योग से ही दूर हो जायेगा।

यद्यपि मनुष्य कर्म फल प्राप्ति के लिए ही करता है परन्तु मनुष्य केवल सांसारिक फलों को ध्यान में रखकर कर्म करता रहता है। ईश्वर को भुला कर केवल सांसारिक पदार्थों को प्राप्त करने के लिए कर्म करता जा रहा है। इस कारण मनुष्य पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं कर पा रहा है। इसलिए मनुष्य को यह समझना आवश्यक है कि पूर्ण सुख के लिए सांसारिक पदार्थों को लक्ष्य न बना कर ईश्वर को लक्ष्य बना लें और सांसारिक पदार्थों को साधन बना लें, तो '**तत्फलसंन्यासः**' चरितार्थ हो जायेगा। क्योंकि मनुष्य सांसारिक पदार्थों को लक्ष्य बना कर चलता है, तो ईश्वर के लिए कर्म नहीं करता है और यदि ईश्वर के लिए कर्म करेगा, तो सांसारिक फलों को फल न मान कर साधन के रूप में ही प्रयोग करता और ईश्वर-दर्शन के लिए आगे बढ़ता है इसे ईश्वर प्रणिधान कहते हैं। जिन कर्मों का फल सांसारिक पदार्थों के रूप में नहीं मिले तो दुःखी नहीं होता और सांसारिक फल मिले, ऐसी आशा को त्याग करता। यदि कोई सांसारिक फल मान-सम्मान के रूप में देवें, तो नहीं लेता और यदि जबरन देते हैं तो उन फलों को ईश्वर के प्रति समर्पित करता है। सांसारिक पदार्थों के रूप में फल जबरन मिले, तो उनका प्रयोग ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग करते हुए उन पदार्थों में राग उत्पन्न नहीं करना ईश्वर के लिए प्रयोग कर रहा हूँ, ऐसा मानना चाहिए। ऐसा करने पर दुबारा वे पदार्थ न मिले, तो दुःख नहीं होगा। इसी का नाम ईश्वरप्रणिधान है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

पृष्ठ संख्या ३७ का शेष भाग......

प्राणियों की ओर से बेपरवाह मत हो।

४५. **वयं सर्वेषु यशसः स्याम।** (अथर्ववेद ६.५८.२)

हम समस्त जीवों में यशस्वी होवें।

४६. **उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।** (अथर्ववेद ८.१.६)

पुरुष तुम्हें तेरे लिए ऊपर उठना चाहिए, न कि नीचे गिरना।

४७. **मा नो द्विक्षत कश्चन।** (अथर्ववेद १२.१.२४)

हम से कोई भी द्वेष करने वाला न हो।

४८. **सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।** (अथर्ववेद ३.३०.३)

समान गति, समान कर्म, समान ज्ञान और समान नियम वाले बनकर परस्पर कल्याणयुक्त वाणी से बोलो।

- सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.-१७६०५३

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org

मे लाये। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

॥ओ३म्॥

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर की आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ-अब्दुल अज़ीज़ की शुद्धिः- गत दो-तीन वर्षों में कुछ सज्जनों ने News Value समाचार या मीडिया प्रचार शैली से शुद्ध किये गये मुसलमानों में से दो-चार को चुनकर कुछ लेख लिखे फिर एक सज्जन ने मुझ से कुछ ऐसे और नाम सुझाने को कहा। कोई विशेष जानकारी तो कोई दे न सका। शुद्धि आन्दोलन को बढ़ाने के लिए स्वामी चिदानन्द जी, अनुभवानन्द जी, ठाकुर इन्द्र वर्मा जी, पं. शान्तिप्रकाश जी, पं. गोपालदेव कल्याणी जी, श्याम भाई जी, पं. नरेन्द्र जी की तपस्या पर तो कोई लिखता नहीं। मैंने तब हैदराबाद के ऋषि भक्त मौलाना हैदर शरीफ जी के सम्बन्ध में कुछ खोजकर लिखने का सुझाव दिया परन्तु कोई आगे न आया। ऋषि ने देहरादून के महाशय मुहम्मद उमर को स्वयं शुद्धकर उन्हें आर्य धर्म में दीक्षित कर अलखधारी नाम दिया। यह थी किसी मुसलमान की पहली शुद्धि। इसके पश्चात् दूसरी ऐतिहासिक शुद्धि मौलाना अब्दुल अज़ीज़ की थी। वह अरबी भाषा व इस्लाम के मर्मज्ञ विद्वान् थे। उन दिनों ऐक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर सबसे बड़ा पद था जो किसी भारतीय को मिल सकता था। आप इस उच्च पद पर गुरदासपुर आदि कई नगरों में कार्यरत रहे। इस शुद्धि का श्रेय **पं. लेखराम जी तथा परोपकारिणी सभा को प्राप्त है।**

महर्षि दयानन्द जी के बलिदान के पश्चात् यह सब से महत्त्वपूर्ण शुद्धि थी। महात्मा हंसराज इस घटना को बड़ा महत्त्व दिया करते थे। वास्तव में यह घटना हमारे लिए ऊर्जा का स्रोत है। मौलाना अब्दुल अज़ीज़ कभी कुसंग में पड़कर धर्मच्युत हो गये। वह उत्तर पश्चिमी पंजाब के एक प्रतिष्ठित कुल में जन्मे थे। उनकी पुत्रियाँ ही थीं। जयपुर के प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध आर्यसमाजी बलभद्र जी ने मेरे एक ग्रन्थ में इनकी शुद्धि की चर्चा पढ़कर मुझसे पत्र व्यवहार करके पूछा था कि हमारे एक कुटुम्बी युवक को पं. लेखराम जी ने शुद्ध किया था। क्या यह वही तो नहीं? मैंने उन्हें सारी जानकारी देते हुए कहा कि जी हाँ, यह मेधावी आर्य पुरुष आप ही के कुल का था। इस शुद्धि पर कड़ा और बड़ा संघर्ष हुआ था। इस कारण शुद्धि का संस्कार लाहौर में करना पड़ा। विचित्र बात तो यह रही कि पौराणिकों ने विरोध तो डटकर किया परन्तु पौराणिकों का एक वर्ग आर्यसमाज के पक्ष में भी खड़ा हो गया। ऐसा आर्य इतिहासकार पं. विष्णुदत्त जी ने लिखा है। तब एक और विचित्र दृश्य देखने को मिला। स्वामी दर्शनानन्द जी के पिता पं. रामप्रताप आर्यसमाज के विरोधी शिविर में थे और स्वामी जी पं. लेखराम की सेना में थे।

परोपकारिणी सभा का योगदानः- इस शुद्धि का श्रेय परोपकारिणी सभा को पं. लेखराम जी ने तो दिया परन्तु इसका प्रमाण कोई नहीं मिल रहा था। **पं. लेखराम जी का लेख मिथ्या नहीं हो सकता सो पूर्ण श्रद्धा से मैंने ३५ वर्ष इसके प्रमाण की खोज में लगा दिये।** यह घटना ऋषिवर के बलिदान के कुछ ही मास के भीतर घटी। पं. लेखराम जी ने इस उच्च शिक्षित युवक के मन में वैदिक धर्म तथा ऋषि के प्रति ऐसी श्रद्धा उत्पन्न कर दी कि अब्दुल अज़ीज़ जी बहुत धन व्यय करके लम्बी यात्रा करके परोपकारिणी सभा के प्रथम अधिवेशन में अजमेर पहुँचे। पं. गुरुदत्त, राव बहादुरसिंह मसूदा, कविराजा श्यामलदास तथा मेरठ आदि दूरस्थ नगरों के नेता उस अधिवेशन में उपस्थित थे। उन्होंने महर्षि की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा से आर्य धर्म की दीक्षा लेने की प्रार्थना की। पाठक इसका प्रमाण मांगेंगे। इसके प्रमाण के लिए **'देशहितैषी'** मासिक अजमेर की फाईल सभा को भेंट की जा रही है।' अमृतसर के पौराणिकों ने ऋषि पर पत्थर वर्षा की। इस शुद्धि में अमृतसर से ही विशेष समर्थन मिला। पं. विष्णुदत्त जी ने लिखा है कि उनकी पुत्रियाँ अमृतसर के प्रतिष्ठित परिवारों में ब्याही गईं। अब्दुल अज़ीज़ जी को अब लाला हरजसराय के नाम से जाना जाने लगा। वह जहाँ-जहाँ रहे आर्यसमाज की शोभा बढ़ाई।

हीरालाल गाँधी विषयक प्रश्नः- हीरालाल गाँधी विषयक एक लेख पढ़कर कुछ उत्साही युवकों ने मुझसे कई प्रश्न पूछे हैं। प्रश्न लेखक से पूछे जायें तो यही अच्छा होगा। मैं कल्पित बातों का क्या उत्तर दूँ। हाँ! कुछ नई बातें जो सुनाता तो रहा परन्तु लिखी कभी नहीं वे आज लिखने लगा हूँ। पहले यह नोट कर लें कि मैंने भाई परमानन्द जी की जीवनी में प्रत्यक्षदर्शी आर्य पुरुष श्री ओमप्रकाश जी कपड़े वाले दिल्ली की साक्षी से लिखा है कि हिन्दुओं का मनोबल बढ़ाने के लिए आर्यसमाज नया बांस में भी सोत्साह हीरालाल की शुद्धि का एक कार्यक्रम आयोजित किया

thearyasamaj.org

गया। इस कथन की प्रामाणिकता को कोई नहीं झुठला सकता। श्रीयुत् धर्मपाल आर्य दिल्ली इस तथ्य के साक्षी हैं कि आर्य नेता श्री ओमप्रकाश आर्यसमाज के इतिहास का ज्ञानकोश थे। उनकी स्मृति असाधारण थी। वह उस समारोह के आयोजकों में से एक थे।

हीरालाल ने श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक आदि को सार्वदेशिक सभा में बताया था गाँधी जी के व्यवहार से चिढ़कर बाप को अपयश देने के लिए हीरालाल मुसलमान बना था। वह इस्लाम की शिक्षा से प्रभावित होकर मुसलमान नहीं बना था। वह लम्बे समय तक बलिदान भवन में ठहरा था। यहीं उसका भाई देवदास उसे मिलने आता रहा। ये बातें मुझे पाठक जी ने सुनाईं। लाला रामगोपाल शालवाले ने भी उसके मुख से सुनी कई बातें सुनाई थीं। जिन्हें आज नहीं लिखूँगा। एक बार हजूरी बाग श्रीनगर में हीरालाल ने चौ. वेदव्रत जी को वही कुछ बताया जो बलिदान भवन में पाठक जी को कहा था। हैदराबाद सत्याग्रह के समय जवाहरलाल नेहरू के एक हानिकारक व्यक्तव्य का हीरालाल ने कड़ा उत्तर लिखा। आर्य नेता समझते थे कि इसे पढ़कर नेहरू आर्यसमाज को और हानि पहुँचा सकता है। हीरालाल को बहुत कहा गया कि वह अपनी प्रतिक्रिया न छपवाये परन्तु वह नहीं मान रहा था, तब आर्य नेता देवदास गाँधी को बुलाकर लाये। देवदास की बात हीरालाल मान जाता था। देवदास आर्य सत्याग्रह का समर्थन करता ही था। उसके कहने पर हीरालाल ने अपना वह व्यक्तव्य रोका। हीरालाल की शुद्धि के समय गाँधी परिवार में से कौन-कौन मुम्बई में था? इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दूँगा। पाठक स्वयं जानने का प्रयत्न करे।

जवाहिरे जावेद का नया हिन्दी अनुवादः- पंजाब के एक उदीयमान सुशिक्षित युवक से कुछ वर्ष पूर्व मेरा सम्पर्क हुआ। वह आर्यसमाज से जुड़ गया। स्वाध्याय में बहुत रुचि है। वह कुछ सप्ताह अजमेर रहकर न्यायदर्शन पढ़ा रहा था। निरन्तर स्वाध्याय, निरन्तर सेवा और निरन्तर सम्पर्क से ही संगठन सुदृढ़ होता है। इस युवक ने सभा को पं. चमूपति जी की बेजोड़ दार्शनिक कृति 'जवाहिरे जावेद' का नया हिन्दी अनुवाद छपवाने का प्रस्ताव दिया है। अर्थ की व्यवस्था यही युवक करेगा। श्री धर्मवीर जी ने इस विषय में मुझसे विचार किया। यह कार्य अत्यावश्यक व करणीय है। मैंने दिन रैन व्यस्त होते हुए भी सभा के लिये इस कार्य को सिरे चढ़ाने का आश्वासन दे दिया है। श्री सत्येन्द्रसिंह जी ने मुझे इसके लिए प्रेरित किया है। पं. चमूपति जी के साहित्य ने इस्लाम का रंग रूप ही बदल डाला है। एक ओर इस्लामी आतंकवाद कट्टरवाद है तो साथ के साथ 'वैदिक इस्लाम' का उदय हो रहा है। सूचियाँ बनाने वाले एक भाई ने पण्डित जी के योगेश्वर कृष्ण को उनका कालजयी ग्रन्थ बताया है। यह सस्ता मत है। मेरे कहने पर ही स्वामी दीक्षानन्द जी ने शरर जी से इसका अनुवाद करवाया और मुझसे दो बार इस पुस्तक की गौरव गरिमा पर विस्तार से लिखवाया गया। किसी कारण से मेरा निबन्ध साथ न छप सका। शरर जी ने जवाहिर जावेद के एक-एक बिन्दू पर अपनी मार्मिक टिप्पणी कहीं भी नहीं दी। वह बहुत कुछ जानते थे। यह उनकी भूल थीं।

मैं इसका मुद्रण भी ऐसा चाहता हूँ कि पुस्तक के शीर्षक, उपशीर्षक व टिप्पणियाँ देखकर अपने-पराये मुग्ध हो जायें। पण्डित चमूपति अपने समकालीन विद्वानों के मन मस्तिष्क पर तो छाये ही थे उनकी छाप नये इस्लामी साहित्य पर कितनी गहरी है, यह इस नये संस्करण में बताया जायेगा। पाकिस्तान के एक दैनिक 'कोहिस्तान' का एक लेख मेरे पास सुरक्षित है, वह लेख इस बात का प्रमाण है कि अनेक मौलवियों पर पण्डित जी का रोब व दबदबा है। Eternity (नित्यता) पर एक मुसलमान विद्वान् ने परम्परा से हटकर पहली बार एक पुस्तक लिखने का साहस किया है। मृत्यु को 'Opening of a door to new life' नये जन्म का द्वार बताने का यह साहस वन्दनीय है। 'कुरान में पैगम्बर के एक भी चमत्कार का वर्णन नहीं' यह कई एक ने खुलकर लिखा है।

पैगम्बर को मुक्ति का तवस्सुल (मध्यस्थ) मानने वाले मदरसों में पढ़ाई जाने वाली एक पुस्तक में हमारे भक्तराज अमींचन्द जी का एक गीत पढ़ाया जा रहा है। अजमेर, दिल्ली, हैदराबाद, मालाबार के मदरसों में जाकर देख लो। यह पं. लेखराम, पं. चमूपति की कृपा का प्रसाद है। यह पढ़कर आर्यजन को कैसा लगेगा कि Eternity (नित्यता) नाम का ग्रन्थ स्वयं लेखक ने मुझे सप्रेम भेंट किया। आर्यो! सर्व सामर्थ्य से पं. लेखराम की परम्परा के विद्वानों के साहित्य का प्रसार प्रकाशन करो। वह दिन दूर नहीं अलीगढ़, देवबन्द और अजमेर के मुसलमान यह पुकारेंगे- 'पं. शान्तिप्रकाश हमारा है, वह तुम्हारा नहीं।' मैं अभी से कहता हूँ कि आपने भक्तराज अमींचन्द के गीत को लिया, कुल्लियाते आर्य मुसाफिर ले ली, जवाहिर जावेद और चौदहवीं का चाँद अपनाया, आप पं. शान्तिप्रकाश, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय भी लेते हो तो ले लो। हम तो सच्चे

thearyasamaj.org

हृदय से कह रहे हैं:-

कौन कहता है कि हम तुम में जुदाई होगी।
यह हवाई किसी दुश्मन ने उड़ाई होगी।।

ऋषि जीवन पर नई खोज:- मेरे बहुत से पत्र-पत्रिकायें दबी पड़ी रह गईं। उनके प्रमाण तो कण्ठाग्र थे परन्तु सामने पुस्तक व पत्रिका रखकर ऋषि जीवन में उनको उद्धृत करना चाहता था। ऐसा हो न सका। अत: श्री रमेशकुमार जी मल्होत्रा ने परोपकारिणी सभा के लिए एक नया, छोटा परन्तु अनूठा ऋषि जीवन लिखने की प्रेरणा दी है। '**जीवन पल पल क्षण क्षण बीता जाये**' तो भी जी जान से जो कुछ भी मेरे सीने में, मेरे मन व मस्तिष्क में सुरक्षित है सब कुछ आर्यसमाज की नई पीढ़ी को सौंप रहा हूँ। लीजिये! कुछ नई जानकारी। जोधपुर के राजघराने के, सर प्रतापसिंह के आपने बड़े किस्से पढ़ लिये। नन्हीं भगतन को चरित्र का प्रमाण पत्र देने वाले भी देखे। अब सुनिये! '**देशहितैषी**' में ऋषि के शाहपुरा में कार्यरत होने का समाचार तो मिलता है परन्तु उसके आगे जोधपुर का एक भी समाचार नहीं मिलता। ये सब अंक परोपकारिणी सभा को सौंप दूँगा। नये युवा विद्वान् इस विषय पर विचार करके कारण तो बतावें कि जोधपुर से कोई समाचार क्यों न निकलने दिया गया। मेवाड़ के तो सब समाचार मिल गये।

घोर विरोधी ने स्वीकार किया:- महर्षि के बलिदान पर '**क्षत्री हितकारी**' पत्र के संख्या चार पृष्ठ पाँच पर 'शोक! शोक!! शोक' शीर्षक देकर ये पंक्तियाँ पढ़ने को मिलती हैं, ''हम को शोक है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसा पण्डित इस काल में होना कठिन है, यह एक पुरुष बड़ा विलक्षण बुद्धि और परमोत्साही उद्योगी था। यह सामर्थ्य इसी महाशय में था कि श्रुति, स्मृति के अर्थ को यथार्थ जाने, यह पुरुष पूर्ण आयु को पहुँचने के योग्य था परन्तु काल यह कब सोचता है।'' इस पत्र के सम्पादक वीरसिंह वर्मा ऋषि के घोर विरोधी को उनकी विद्वत्ता व व्यक्तित्त्व पर ये शब्द लिखने पड़े परन्तु इसी लेख में वह ऋषि पर वार भी करता है। न जाने उसकी क्या विवशता थी। चलो! यह तो मानना पड़ा कि श्रुति, स्मृति के यथार्थ अर्थ को जानने का सामर्थ्य इसी महात्मा में है। '**देशहितैषी**' पत्र से यह अवतरण यहाँ उद्धृत किया है।

भूल सुधार:- अल्पज्ञ जीव से भूल का होना सम्भव है। जब कभी लिखने-बोलने में जाने-अनजाने या मुद्रण दोष से हमसे भूल हो गई, हम ने पता लगने पर झट से क्षमा माँगते हुए भूल का सुधार करना अपना कर्त्तव्य जाना। अभी 'तड़प झड़प' में इन दिनों लातूर (महाराष्ट्र) के ठाकुर शिवरत्न जी का नाम देना था परन्तु भूलवश हरगोविन्द सिंह लिखा गया। उनके भाई का नाम गोविन्दसिंह था। वह कलम (मराठवाड़ा) के जाने माने आर्य पुरुष थे। इन दोनों की चर्चा मेरे ग्रन्थों में है। 'तड़प झड़प' डाक में भेजते ही चूक का पता चल गया। मैंने तत्काल चलभाष करके धर्मवीर जी को इसे ठीक करने को कहा। व्यस्ततायें उनकी भी इतनी हैं कि वह ऐसा न कर सके। फिर बता दें कि ठाकुर शिवरत्नसिंह जी ने पंजाब के पं. विष्णुदत्त से अपनी पुत्री का विवाह किया तो पौराणिकों के प्रचण्ड बहिष्कार के कारण उन्हें विदर्भ से पंजाब पलायन करना पड़ा।

एक दु:खद लेख:- 'आर्यजगत्' के २५ मई अंक में माननीय कृष्णचन्द्र जी गर्ग पंचकूला का 'जगन्नाथ' विषयक एक लेख छपने की जानकारी मिली। यह लेख किस प्रयोजन से लिखकर छपवाया? यह मैं समझ न पाया। ऋषि के हत्यारे का नाम जगन्नाथ नहीं, यह कहानी झूठी है इत्यादि बातें लिखने की क्या आवश्यकता पड़ गई? श्रीराम शर्मा, लक्ष्मीदत्त दीक्षित आदि बहुत निब घीसा चुके। महत्त्व हत्यारे के नाम का नहीं, मुख्य बात ऋषि के विषपान की, ऋषि को मरवाने के षड्यन्त्र की है। इस विषय पर प्रमाणों के ढेर लगा कर लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में जितनी जानकारी दी गई है, किसी भी ग्रन्थ में इतनी खोज नहीं मिलेगी।

ऋषि की जोधपुर यात्रा के समाचार क्यों बाहर न निकलने दिये गये? यह ऊपर हम बता चुके। श्री कृष्णसिंह बारहट का ग्रन्थ छप चुका है। क्या देखा है? आपके घर के पास से दित्तसिंह ज्ञानी के कथित शास्त्रार्थों की कल्पित कहानी छपी, नन्हीं वेश्या को चरित्र की पावनता का प्रमाण पत्र देते हुए लिखा गया। श्री गर्ग जैसे सब सयाने यह चुपचाप पढ़ते-सुनते रहे। स्वामी आत्मानन्द जी को ऋषि ने चित्तौड़ में गुरुकुल खोलने के लिए कहा, अन्त समय में नाई को पाँच रुपये दिये गये। इन दो प्रेरक प्रसंगों को झुठलाया गया। तैलंग स्वामी की आड़ में ऋषि पर वार प्रहार किया गया। अब शाहपुरा के रसोइये की दुहाई देकर आर्यजन को क्या सन्देश देना चाहते हैं? आपकी भावना शुद्ध है, यह मैं जानता हूँ।

श्री पं. लेखराम जी ने सर्वप्रथम सर नाहरसिंह के नाम ऋषि का एक पत्र छापा कि शाहपुरा के दिये सब नौकर बड़े निकम्मे थे। इस पत्र का प्रमाण देकर हमने श्रीराम

thearyasamaj.org

और प्रिं. लक्ष्मीदत्त को चुप करवाया। स्वामी सत्यानन्द जी के ग्रन्थ की विशेषतायें भी हैं, कुछ कमियाँ भी हैं। जगन्नाथ की कहानी झूठी का शोर मचाकर इस ग्रन्थ का अवमूल्यन न करें। मूलराज के गीत गा-गाकर उसे ऋषि का कर्मठ साथी बता कर आर्य इतिहास प्रदूषित किया गया। आप चुप बैठे रहे, यह चिन्ता का विषय है। परोपकारी के धर्म रक्षा महाभियान में जुड़िये।

स्वामी बलेश्वरानन्द जी द्वारा सम्मान के लिए आभार:- पुण्डरी के स्वामी श्री ब्रह्मानन्द आश्रम के स्तम्भ प्रिय आर्यवीर राजपाल स्वामी बलेश्वरानन्द जी का सन्देश लेकर आये कि हम इस वर्ष आपका सम्मान करना चाहते हैं। स्वीकृति दें। मैं प्रायः हर व्यक्ति व संस्था का ऐसा प्रस्ताव अब सुनकर अनसुना कर देता हूँ। माँगने की, धन संग्रह की प्रवृत्ति न बन जावे। लोकैषणा की सर्पिणी न डस जावे, सो सम्मान से बचता हूँ परन्तु स्वामी जी का प्रस्ताव मैंने स्वीकार करके तत्काल निर्णय कर लिये कि वह जो कुछ देंगे उसमें कुछ और धन मिलाकर श्रीमती वेद जिज्ञासु के नाम की स्थिर निधि स्थापित करके अभी ५०.०००/- की राशि परोपकारिणी सभा को भेंट करूँगा।

स्वामी जी ने तो मेरे मनोभाव न जाने कैसे जान लिये कि सम्मान राशि ही ५१०००/- की भेंट कर दी। मैंने यह राशि सभा को पहुँचा दी है और इसमें जो कुछ हो सकेगा और राशि मिला दी जावेगी। मैं स्वामी जी का, आश्रम का और स्वामी जी के भक्तों का हृदय से आभार मानता हूँ। यह आश्रम वेद प्रचार का वैदिक धर्म का और आर्यसमाज का सुदृढ़ दुर्ग बने, ऐसा हम सबका प्रयास होना चाहिये।

कहानीकार सुदर्शन जी तथा हरियाणा:- स्वर्गीय चौ. मित्रसेन जी बहुत दूरदर्शी थे। आपने चौधरी छोटूराम जी की एक उर्दू पुस्तक (लेखमाला) का हिन्दी अनुवाद करने की इच्छा प्रकट की। मैंने उन की इच्छा शिरोधार्य कर प्राक्कथन स्वरूप चौधरी छोटूराम तथा आर्यसमाज पर कुछ खोजपूर्ण सामग्री देने का सुझाव रखा। चौधरी जी को मेरा सुझाव जँच गया। छपने पर मुझे कुछ प्रतियाँ भेजना वे भूल गये। एक ठोस काम वे कर गये। इसमें मैंने एक घटना दी कि चौधरी छोटूराम जी ने कहानीकार सुदर्शन जी को जाट गज़ट का सम्पादक बनाया। केवल इसलिये कि वह पक्के आर्यसमाजी हैं। एक गोरे पादरी के साथ टक्कर लेने से गोरा शाही सुदर्शन जी से चिढ़ गई। चौ. छोटूराम, चौ. लालचन्द से आर्यसमाजी सम्पादक को हटाने का दबाव बनाया। चौ. छोटूराम अड़ गये। सरकार की यह बात नहीं मानी। यह घटना प्रथम विश्व युद्ध के दिनों की है। वर्ष का स्मरण मुझे नहीं था हरियाणा के किसी भी आर्य ने, जाट ने, अजाट ने इस घटना के समय का पता लगाने में कतई रुचि नहीं दिखाई। अब सुदर्शन जी की एक पुस्तक से प्रमाण मिल गया कि आप १९१६-१९१७ में रोहतक में कार्यरत थे।

टिप्पणी

१. द्रष्टव्य देशहितैषी मासिक का मार्च १८८४ का अंक।

गीत

-आचार्य ओमदेव

१. धर्म की ये पिपासा
धर्म के सत्य से शान्त होती है।
विषय-वासना में फँसे हुए,
पाप-जाल में पड़े हुए,
काम-क्रोध में बन्धे हुए,
जीवन की ये चाल,
पथ के कष्ट से दुखदायी होती है।
मन की ये पिपासा.....

२. लोभ-लालच के दल-दल में
माया-मोह के चक्कर में
तेरे-मेरे की पड़ी भावना
स्वार्थ की ये खार,
सर्प के दन्त से विषाक्त होती है।
मन की ये पिपासा.....

३. चोरी-ठगी ये कालाबाजारी
घटा-बढ़ी ये नापा-नापी
अधिक सूत ये लेनी-देनी
जगत की ये होड़,
भेड़िये के लालच से क्रूर होती है।

४. ईश्वर ध्यान धरे दिल में
वेद की ज्योति जगे मन में
बुद्धि के फेरि कपाट खुलें
मन की आभा,
तन के सुख से सुखदायी होती है।
मन की ये पिपासा.....

- महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य गुरुकुल, सोनाखार, छिन्दवाड़ा, म.प्र.-४८०००२

thearyasamaj.org

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द महाराज
२३ दिसम्बर जिनका बलिदान दिवस है

- सत्येन्द्रसिंह आर्य

पंजाब प्रान्त के जालन्धर जिले में तलवन ग्राम में एक प्रतिष्ठित परिवार में लाला नानकचन्द्र जी के गृह में विक्रमी सम्वत् १९१३ में फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन जिस बालक का जन्म हुआ, उसका नाम पण्डित जी ने बृहस्पति रखकर भी प्रसिद्ध नाम मुंशीराम रख दिया। संन्यास ग्रहण करने के समय तक वे इसी नाम से विख्यात रहे। पिता जी पुलिस में इस्पेक्टर के पद पर राजकीय सेवा में थे। अत: जल्दी-जल्दी होने वाले स्थानान्तरण के कारण बच्चों की पढ़ाई में व्यवधान पड़ना स्वाभाविक था। परन्तु एक लाभ भी हुआ। जिन दिनों श्री नानकचन्द्र जी बरेली में पद स्थापित थे, उन दिनों अंग्रेजी भाषा के व्यामोह में फंसे और नास्तिकता के भँवर में गोते लगाते मुंशीराम को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के दर्शन करने का, उनके वेदोपदेश सुनने का, उनसे मिलकर अपनी शंकाओं का समाधान करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रतिपादित वैदिक विचारधारा का मुंशीराम जी के जीवन पर प्रभाव पड़ने में यद्यपि वर्षों का समय लगा, परन्तु अन्त में ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि वे ऋषि-मिशन के दीवाने हो गए। एक-एक करके इतने कार्य किये कि उनका सही मूल्यांकन कोई ऋषि-भक्त, तपस्वी, वैदिक विद्वान् ही कर सकता है।

जालन्धर में कन्या पाठशाला खोली जिसका स्थानीय लोगों ने घोर विरोध किया। उस युग में सब स्त्री-शिक्षा के शत्रु थे। पाठशाला चार लड़कियों से आरम्भ हुई, दो बेटियाँ इनकी स्वयं की थी और दो इनके साले की थीं। वही संस्था आज स्नातकोत्तर कन्या विद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित है जिसमें हजारों कन्याएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। हरिद्वार के निकट काँगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की। अपने दोनों पुत्रों हरिशचन्द्र एवं इन्द्र को उसी में प्रविष्ट किया। वह संस्था भी आज एक विश्वविद्यालय के रूप में विद्यमान है। इस संस्था से आर्यसमाज को बड़ी संख्या में वेद के विद्वान्, उपदेशक, साहित्यकार, पत्रकार एवं समाजसेवी राजनेता प्राप्त हुए। पं. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति एक आर्य पुरुष, साहित्यकार, पत्रकार के रूप में इसी संस्था की देन हैं।

वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए मुंशीराम जी ने सद्धर्म प्रचारक पत्र निकाला। पहले उर्दु में और बाद में आर्य भाषा में। पत्र इतना लोकप्रिय था कि पाठकों को अगले अंक की सदैव प्रतीक्षा रहती थी। मुद्रण की सुविधा के लिए अपना प्रेस स्थापित किया। देश-दुनिया के समाचारों से आर्य जनता को परिचित कराये रखने का यह बड़ा सशक्त माध्यम था। अपनी पत्रकारिता में कुशलता के बल पर मुंशीराम जी ने उस युग में राष्ट्र की महती सेवा की।

अछूतोद्धार का कार्य उनकी प्राथमिकता में था। राजनैतिक रूप से उस समय कांग्रेस एक पार्टी के रूप में देश की आजादी के लिए कार्य कर रही थी। मुंशीराम जी (और अप्रैल १९१७ में संन्यास ग्रहण के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द जी) उस समय देश के अग्रणी नेताओं में थे उनके जीवन की एक-एक घटना उनकी महानता की साक्ष्य है। वर्ष १९१७ ईसवी में अप्रैल मास में उत्सव के समाप्त होने के पश्चात् अगले दिन उन्हें संन्यास लेना था। संन्यास-ग्रहण संस्कार के समय वहाँ हजारों की भीड़ थी। आर्य समाज के बहुत से संन्यासी, पण्डित और अधिकारी साक्षीरूप से उपस्थित थे। संस्कार में सबसे विशेष बात यह हुई कि, मंशीराम जी ने किसी संन्यासी महानुभाव को अपना आचार्य न बनाकर परमात्मा को ही आचार्य माना और जो प्रक्रिया आचार्य द्वारा पूरी होनी थी, वह स्वयं ही पूरी कर ली। क्षौर कराकर और भगवावस्त्र पहनकर वे यज्ञ-मण्डप में आए और खड़े होकर उन्होंने निम्नलिखित आशय की घोषणा की-

"मैं सदा सब निश्चय परमात्मा की प्रेरणा से श्रद्धापूर्वक ही करता रहा हूँ। मैंने संन्यास भी श्रद्धा की भावना से प्रेरित होकर ही लिया है। इस कारण मैंने श्रद्धानन्द नाम धारण करके संन्यास में प्रवेश किया है। आप सब नर-नारी परमात्मा से प्रार्थना करें कि वे मुझे अपने इस नए व्रत को पूर्णता से निभाने की शक्ति दे।"

सन् १९१९ में बैसाखी के दिन अमृतसर में जलियाँवाला बाग में भीषण हत्याकाण्ड हुआ। उसी वर्ष कुछ माह पश्चात् अमृतसर में ही कांग्रेस का महा-अधिवेशन होना था, परन्तु बैसाखी वाली भयावह घटना लोगों के मन-मस्तिष्क पर छाई हुई थी। निर्भीकता की प्रतिमूर्ति

thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने स्वागताध्यक्ष का कार्य भार ग्रहण करके सारे आयोजन को सहज और सरल बना दिया।

अछूतोद्धार एवं शुद्धि सभा- स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आर्य पुरुष थे और कांग्रेसी भी थे। उस समय कांग्रेस में आर्यों की संख्या काफी अधिक थी। उन्होंने समाज में अछूत कहे जाने वाले लोगों के लिए विशेष कार्य किया। संस्थागत रूप में इस कार्य को आगे बढ़ाया। जन्मना जाति-प्रथा को यथावत् बनाए रखने वाले हिन्दुओं एवं मठाधीशों का उस समय दबदबा था। अछूत कहे जाने वाले नर-नारियों की बात तो दूर रही, उस समय के हिन्दू मठाधीश, सन्त-महन्त तो मजबूरी में या प्रलोभनवश ईसाइयों -मुसलमानों द्वारा हिन्दू वर्ग से धर्मान्तरित किये गए सवर्ण हिन्दुओं को भी शुद्ध करके पुन: अपने में मिलाना शास्त्र-विरुद्ध और पूर्णत: निषिद्ध मानते थे। हिन्दू (आर्य) जाति एक प्रकार से कच्चे माल की खान बनी हुई थी। सूक्ष्म राजनीतिक सूझबूझ वाले ईसाई मिशनरी और मुल्ला मौलवी इसी खान में से विशेषकर अछूत कहे जाने वाले वर्ग में से हमारे ही भाई-बहनों को बहला-फुसलाकर, प्रलोभन देकर, धोखाधड़ी से ईसाई-मुसलमान बना रहे थे। हिन्दू जाति के विघटन की यह चरम स्थिति थी। ऐसे में दूरदर्शी आर्य नेता एवं इस हिन्दू जाति के परम शुभचिन्तक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अछूतोद्धार एवं शुद्धि का कार्य एक आन्दोलन के रूप में किया। शुद्धि के काम से महात्मा गाँधी के चहेते अलीबन्धु बौखला गए और उन्होंने गाँधी जी से स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि-कार्य के विरुद्ध शिकायत की। गाँधी जी द्वारा एतद्विषयक चर्चा किये जाने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि आप अली बन्धुओं को कहकर इस्लाम द्वारा जारी तबलीग (धर्मान्तरण के लिए इस्लाम मतावलम्बियों द्वारा निरन्तर चलाई जाने वाली प्रक्रिया) का काम रुकवा दीजिए, मैं शुद्धि का काम बन्द कर दूँगा। भला यह कार्य मुस्लिम तुष्टिकरण के जनक और मसीहा महात्मा गाँधी के बूते का कहाँ था। अत: स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज कांग्रेस से अलग हो गये। शुद्धि के कार्य को करने के मूल्य के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को अपने प्राण आहूत करने पड़े।

विडम्बना देखिए कि जिस हत्यारे अब्दुल रसीद ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को गोली मारी और जिसे रंगे हाथों पकड लिया गया उसी के बचाव के लिए महात्मा गाँधी के दायाँ और बाँया हाथ (जैसा कि अली बन्धुओं-मौलाना मोहम्मद अली, मौलाना शौकत अली को कहा करते थे) ये अली बन्धु न्यायालय में उपस्थित रहा करते थे और गाँधी जी इस बात को जानते थे। मुस्लिम प्रेम के आगे महात्मा गाँधी को सत्य दिखाई नहीं पड़ता था जैसे रतौन्धी (आँखों की एक बीमारी) वाले व्यक्ति को रात्रि में कुछ नहीं दिखाई पड़ता। इस्लाम मतावलम्बियों की करतूतों का वर्णन करने लगे तो पोथे पर पोथे बनते चले जायेंगे परन्तु उन करतूतों का किनारा नहीं पा सकते। उदाहरण के लिए एक घटना देते हैं।

ख्वाजा हसन निजामीकृत 'दाइये इस्लाम'- ख्वाजा हसन निजामी अपने समय के मौलवियों, पीरों, सूफियों और मुस्लिम नेताओं में सर्वोच्च स्थान रखते थे। इस्लामी साहित्य और इतिहास के वे बहुत बड़े आलिम माने जाते थे। वह अपना अखबार निकालते थे और अपना रोजनामचा (दैनन्दिनी) भी लिखते थे। देहली की निजामी दरगाह में उनका मुख्य निवास था। वह सदा यही सोचते रहते थे कि किस प्रकार भारत के हिन्दुओं को इस्लाम में धर्मान्तरित किया जाए और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित-अनुचित की चिन्ता किये बिना वे किसी भी सीमा तक जाने को तैयार थे। जहाँ उन्होंने और अनेक उपाय इस बात के लिए मुसलमानों को जताये थे, वहीं हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित करने का एक बड़ा विषैला और गुप्त उपाय भी निकाला था। सब मुसलमानों में उस उपाय का गुप्त रूप से प्रचार किया गया। जितने धन्धे-पेशे मुसलमान करते थे जैसे नाई, धोबी, लुहार आदि उन्हीं के अनुसार उनको उपाय समझाए गए थे। यहाँ तक कि बाजारू औरतों (वेश्याओं) को भी हिदायत दी गई थी कि वे अपनी सुन्दरता में फँसा कर हिन्दुओं को मुसलमान बनाएँ। इन सब उपायों को एक पुस्तक में लिखा गया था और पुस्तक का नाम था- **'दाइये इस्लाम'**। इस पुस्तक को गुप्त रूप से न केवल भारत भर के मुसलमानों में पहुँचाया गया, अपितु भारत से बाहर के इस्लामी देशों में भी भेजा गया था।

हिन्दुओं के विरुद्ध किये जा रहे इस भीषण षड्यन्त्र की पौराणिकों के किसी सन्त-महन्त, मठाधीश, शंकराचार्य अथवा नेता को भनक तक न लगी। स्वामी श्रद्धानन्द जी तब मुख्य रूप से दिल्ली में ही रहा करते थे। नया बाजार के एक मकान के ऊपरी भाग में निवास करते थे। स्वामी जी महाराज बड़े ही विलक्षण आर्य नेता थे। वह आर्य समाज के साथ-साथ समस्त हिन्दुओं के बारे में खबरगीरी रखते थे। वह यह पूरा ध्यान रखते थे कि बेखबर सोती

thearyasamaj.org

हिन्दू जाति की सब तरफ से रक्षा की जाए। इस बात को जानने के लिए चाणक्य मुनि द्वारा वर्णित उपायों को काम में लाते थे। उसी आधार पर उन्हें अत्यन्त सूक्ष्म और अतीव गुप्त रूप और अज्ञात द्वार से ख्वाजा हसन निजामी द्वारा लिखित और प्रचारित **'दाइये-इस्लाम'** पुस्तक की सूचना मिली। पुस्तक उर्दु में लिखी गयी, प्रेस में छपी। कातिबों ने काम किया, मशीनों पर छपी, बाइण्डरों ने जिल्दें बान्धी, दुकानों में बिक्री के लिए गयी। न जाने कितने हाथों में पहुँची। प्रैस एक्ट के अनुसार छपी पुस्तकों की प्रतियाँ सरकारी कार्यालय को भेजी जानी चाहिए। इतना सब कुछ होते हुए भी कानोकान किसी गैर-मुसलमान को जरा सी भी भनक सुनाई नहीं पड़ी। सारे भारत में गुप्त खोज करने पर इस पुस्तक की एक भी प्रति न मिल सकी। परन्तु स्वामी जी के हाथ भी बहुत लम्बे थे। अन्त में बहुत यत्न करने पर एक प्रति ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका में एक सज्जन के हाथ लगी और उस पुस्तक को दिल्ली स्वामी जी के पास पहुँचा दिया गया। उन्होंने उसको पढ़ा और देखा कि हिन्दुओं को नाश के गहरे गड्ढे में गिराये जाने के लिए कैसे षड्यन्त्र किये और कराये जा रहे हैं। स्वामी जी ने उस पुस्तक को फिर से छपवाया और 'आर्य-बिगुल', 'अलार्म' नाम से उसका खण्डन और आलोचनाएँ भी प्रकाशित हुई। हिन्दुओं को सावधान किया गया। आज के तथाकथित आर्य नेता? तो अपनी सर्व-स्वीकार्यता का ग्राफ ऊँचा करने के लिए मुस्लिम नेताओं और ईसाई पादरियों की चापलूसी में जीवन गुजार देते हैं परन्तु नोबेल पुरस्कार (शान्ति के लिए) प्राप्त करने की उनकी इच्छा अपूर्ण ही रह जाती है। नोबेल पुरस्कार क्या, नई दिल्ली स्थित उप वैटिकन में दशकों तक मत्था टेकने के बाद राज्यसभा की सदस्यता भी नसीब न हुई। ऐसे लोग जाति की क्या सेवा करेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान की पहली कड़ी यह पुस्तक **'दाइये इस्लाम'** कहीं जा सकती है। आज साधारण जनता और आर्यजनों की तो बात ही क्या है अपितु बड़े-बड़े नेताओं को इस पुस्तक का पता भी नहीं है, उसका पढ़ना तो दूर रहा। इन पंक्तियों के लेखक के पास उस पुस्तक के हिन्दी संस्करण की एक प्रति है जो परोपकारिणी सभा को पुस्तकालय हेतु सौंप दी जाएगी।

प्रतिवर्ष अमर हुतात्मा का बलिदान दिवस मनाया जाता है। धुआँ-धार व्याख्यान होते हैं। अखबारों में लेख लिखे जाते हैं। उनके अनेक उत्तम गुणों पर प्रकाश डाला जात है परन्तु उस जहरीली पुस्तक दाइये-इस्लाम का मानो किसी को पता ही नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अछूतोद्धार एवं शुद्धि का जो कार्य अपने जीवन में किया उनके बलिदान के बाद उसमें शिथिलता आ गई थी। आर्य समाज के लिए यह हानि की बात रही। स्वामी जी ने देश, जाति, धर्म की अहर्निश सेवा की, ऋषि मिशन के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया और २३ दिसम्बर सन् १९२६ को अपने प्राण भी दे दिये। उस नर-नाहर सर्वस्व-त्यागी आर्य पुरुष के प्रति मेरी विनम्र श्रद्धाञ्जलि।

- ७५१/६, जागृति विहार, मेरठ

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व् जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

hearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८८.	सौवर	५.००
८९.	पारिभाषिक	२०.००
९०.	धातुपाठ	
९१.	गणपाठ	२०.००
९२.	उणादिकोष	
९३.	निघण्टु	१५.००
९४.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	
९५.	व्यवहारभानुः	१२.००
९६.	निरुक्त (मूल)	८०.००
९७.	अष्टाध्यायी (मूल)	२०.००
९८.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९९.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द	१००.००
१००.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द	१३०.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१०१.	महर्षि दयानन्द– आत्मकथा	
१०२.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	
१०३.	परोपकारिणी सभा का इतिहास	
१०४.	आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार	१०.००
१०५.	आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा	८.००
१०६.	दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली	१५.००
१०७.	देशभक्त कुँ.चाँदकरण शारदा	५.००
१०८.	दयानन्द वचनामृत	३.००
१०९.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
११०.	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली	२०.००
१११.	वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग	३१.००
११२.	अथर्ववेदः समस्याएं और समाधान	३५.००
११३.	वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद	३५.००
११४.	वेदों के आख्यान (प्रथम भाग)	३५.००
११५.	वेदों के दार्शनिक विचार	४०.००
११६.	सोम का वैदिक स्वरुप	५०.००
११७.	पर्यावरण का वैदिक स्वरुप	
११८.	वेद और समाज	
११९.	वेद और राष्ट्र	
१२०.	वेद और विज्ञान	
१२१.	वेद और ज्योतिष	८०.००
१२२.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१)	५०.००
१२३.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२)	५०.००
१२४.	वेद और निरुक्त	१००.००
१२५.	वेद और इतिहास	१००.००
१२६.	वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	१००.००
१२७.	वेद और शिल्प	
१२८.	वेदों में अध्यात्म	
१२९.	वेदों में राजनैतिक विचार	१००.००
१३०.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	
१३१.	वैदिक समाज विज्ञान	
१३२.	सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद	
१३३.	सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद	

प्रो. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१३४.	आर्यसमाज और शोध	१५.००
१३५.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र	

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	स्वामी विष्वङ् परिव्राजक	
१३६.	ध्यान योग एवं रोग निवारण	१५०.००
१३७.	योग	५०.००
१३८.	अष्टाङ्ग योग	२०.००
१३९.	समाधि	१००.००
	स्वामी अभयानन्द सरस्वती	
१४०.	प्राणायाम चिकित्सा	
	डॉ. सत्यदेव आर्य	
१४१.	वैदिक सन्ध्या मीमांसा	२५.००
१४२.	ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन	२५.००
१४३.	तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन	२५.००
	विरजानन्द दैवकरणि	
१४४.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	८.००
१४५.	महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ	५.००
	वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी	
१४६.	बूंदी शास्त्रार्थ	५.००
१४७.	वैदिक सूक्ति–सुमन	२५.००
	वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ	
१४८.	दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट	५५०.००
१४९.	आर्य समाज की मान्यताएं	२०.००
१५०.	मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र	१५.००
१५१.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द)	२५.००
१५२.	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द	१५.००
१५३.	ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र)	४.००
१५४.	ईशादिदशोपनिषद् (मूल)	१०.००
१५५.	वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला)	२५.००
१५६.	सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल	१०.००
१५७.	दयानन्द दिव्य दर्शन	१२.००
१५८.	वृक्षों में जीवात्मा	१०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१५९.	महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश	३.००
१६०.	महर्षि महिमा	२.००
१६१.	स्वामी दयानन्द चरितम्	१०.००
१६२.	ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	८.००
१६३.	निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष	५.००
१६४.	मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान	१२.००
१६५.	नेपाली सत्यार्थ प्रकाश	२००.००
१६६.	परोपकारी विशेषांक	२५.००
१६७.	महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति)	५०.००
१६८.	संगठन सूक्त	२.००
१६९.	३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर	१००.००
१७०.	प्यारा ऋषि	२५.००
१७१.	नककटा चोर	३०.००
१७२.	महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी	३५.००
१७३.	स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य	३५.००
१७४.	भगवान् को क्यों मानें ?	२५.००
१७५.	महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय	३०.००
१७६.	आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५.००
१७७.	शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़	२५.००
१७८.	नैति मंजूषा	९५०.००
१७९.	ऋग्वेदादि संदेश	३०.००
१८०.	त्याग की धरोहर	१००.००
	ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.) (स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)	
१८१.	अष्टांग योग–१ (सी.डी.)	
१८२.	अष्टांग योग–२ (सी.डी.)	
१८३.	आसन (सी.डी.)	
१८४.	सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)	

शेष भाग अगले अंक में....

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द और सृष्टि संवत्

- डॉ. निरुपण विद्यालंकार

सृष्टि उत्पत्ति का समय क्या है? कितने काल तक रहती है? उसके क्या विभाग हैं? इत्यादि विषयों पर भी शास्त्रों में विचार पाया जाता है।

भास्कराचार्यकृत सिद्धान्तशिरोमणि में आता है-

लङ्कानगर्यामुदयाच्च भानो स्तस्यैव वारे प्रथमं बभूव।
मधोः सितादेर्दिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत् प्रवृत्तिः।।

अर्थात् लंका नगरी में सूर्य के उदय होने पर उसी वार अर्थात् आदित्यवार में चैत्र मास पक्ष के प्रारम्भ में दिन, मास, वर्ष युगादि एक साथ प्रारम्भ हुए।

इसी बात को हिमाद्रि में इस प्रकार लिखा है-

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् चैत्र शुक्लपक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की। इससे स्पष्ट है कि युगादि का प्रारम्भ सूर्योदय से माना गया। सूर्य सिद्धान्त में एक और श्लोक आता है-

ग्रहर्क्षदेवदैत्यादि सृजतोऽस्य चराचरम्।
कृतादिवेदा दिव्याब्दाः शतघ्नो वेधसो गताः।।

अर्थात् कल्प के आरम्भ में दिव्यमान के ४७४० दिव्य वर्ष बीतने पर ग्रह, नक्षत्र, देव, दैत्यादि चराचर की सृष्टि हुई।

शास्त्र के आधार पर सृष्टि काल को एक ब्राह्म दिन और प्रलय काल को एक ब्राह्म रात्रि संज्ञा दी गई। एक ब्राह्म दिन में एक सहस्त्र चतुर्युगी होती है और एक चतुर्युगी में चार युग अर्थात् सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग क्रमशः- १७२८०००, १२९६०००, ८६४०००, ४३२००० वर्ष होते हैं। इस प्रकार चारों युगों का योग ४३२०००० वर्ष होता है।

इस सृष्टि कल्प में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ चतुयुगी होती है। सूर्य सिद्धान्त में आता है-

युगानां सप्ततिः सैका मन्वन्तरमिहोच्यते।
कृताब्दसंख्यस्तस्यान्ते सन्धिः प्रोक्तो जलप्लवः।।

इस युग के प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैर्मो ने सृष्ट्युत्पत्ति काल के सम्बन्ध में निम्न उद्गार प्रकट किये हैं-

''अणुओं के बनने में एक घण्टे से कम समय लगा। लोक-लोकान्तरों को बनने में कुछ करोड़ वर्ष लगे।''

कुछ विद्वान् मन्त्रों से युगों की कल्पना करते हैं:-

यथा-**या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं परा।**
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।।

स्वामी आत्मानन्द जी ने इस मन्त्र का अर्थ किया है- ''सातो लोकों में अनेकों ग्रह तथा वनस्पतियाँ, तीन दिव्य युग (महायुग) पूर्व उत्पन्न हुये, ऐसा मैं मानता हूँ।''

यजुर्वेद में महर्षि दयानन्द ने इसका जो अर्थ किया है उसका भाषानुवाद निम्न है।

मैं जो (ओषधीः) सोम आदि ओषधियाँ (देवेभ्यः) पृथिवी आदि में (त्रियुग) तीन वर्ष (पुरा) पुरानी (पूर्वाः) पहले (जाताः) प्रसिद्ध अर्थात् उत्पन्न हुई और जो (बभ्रूणाम्) रोगों को धारण करने वाले रोगियों के (शतं सप्त च) एक सौ सात (धामानि) मर्मस्थलों को व्याप्त करली हैं उन्हें (नू) शीघ्र (मनै) जानूँ।

भावार्थ- मनुष्य, जो पृथिवी और जल में औषधियाँ उत्पन्न होती हैं, जब वे तीन वर्ष पुरानी हो जायें तब उन्हें ग्रहण करके वैद्यक शास्त्र की विधि से सेवन करते हैं। वे सेवन की हुई सब मर्मस्थानों में व्याप्त होकर रोगों को हटाकर शारीरिक सुखों को शीघ्र उत्पन्न करती हैं।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने 'त्रियुगम्' का अर्थ तीन वर्ष किया है यह युक्ति संगत प्रतीत होती है।

अथर्ववेद के निम्न मन्त्र से भी कई विद्वान् सृष्टि की आयु बताते हैं। मन्त्र इस प्रकार है-

शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहृणीयमानाः।।

इसका भाव यह है कि दस लाख तक बिन्दु रखकर- (शतं अयुत) उनसे पूर्व २, ३, ४ के अंक रख देने चाहियें। जो कि इस प्रकार होगी ४३२०००००० वर्ष। वेद के आधार पर यह सृष्टि की आयु है। मनुस्मृति में भी सृष्टि की आयु में १४ मन्वन्तर तथा उनकी १५ संधियों का समय लगता है। तद्यथा-

ससन्धयस्ते मनवः कल्पे ज्ञेयाश्चतुर्दश।
कृतप्रमाणः कल्पादौ सन्धिः पञ्चदशः स्मृतः।।

सूर्य सिद्धान्त के रचयिता के समय सृष्टि की कितनी आयु हो चुकी थी, कितनी शेष थी, इसका वर्णन इस प्रकार आता है-

कल्पादस्माच्च मनवः षड् व्यतीताः ससन्धयः।
वैवस्वतस्य च मनोर्युगानां त्रिघनो गतः।।

thearyasamaj.org

अर्थात् इस कल्प सृष्टि की उत्पत्ति में अब तक ६ सन्धियों के स्वायम्भुव मनु से लेकर चाक्षुष मनु तक, ६ मनु तो सम्पूर्ण और सातों वैवस्वत् मनु की एक सन्धि तथा २७ चतुर्युग तो सम्पूर्ण और २८वें इस वर्तमान चतुर्युग के सत्य-युग, त्रेता, द्वापर, के बीतने पर यह कलियुग चल रहा है, जिसके ५०८५ वर्ष बीतकर यह ८६वाँ वर्ष चल रहा है।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि -

ते चैकस्मिन् ब्राह्मदिने चतुर्दश भुक्तभोगा भवन्ति। एकसहस्रं चातुर्युगानि ब्राह्मदिनस्य परिमाणं भवति।।

अर्थात् एक ब्राह्म दिन में १४ मन्वन्तर (९९४ चतुर्युगी) भुक्त भोग होते हैं। और एक ब्राह्म दिन में १००० चतुर्युगी होती है। ऋषि दयानन्द का भी कहना है कि- जब पर्यन्त हजार चतुर्युगी व्यतीत न हो चुकेगी तब पर्यन्त ईश्वरोक्त वेद का पुस्तक ये जगत् और हम सब मनुष्य लोग भी ईश्वर के अनुग्रह से सदा वर्तमान रहेंगे।

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति प्रकरण में सृष्टि सम्वत् पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इस पर विद्वानों में बड़ा विवाद है। हम इस विवाद में न जाकर महर्षि दयानन्द के सृष्टि सम्वत् सम्बन्धी कुछ अंश को यहाँ अविकल रूप से दर्शाते हैं। वे लिखते हैं- यह जो वर्तमान सृष्टि है, इसमें सातवें वैवस्वत मनु का वर्तमान है। इससे पूर्व छः मन्वन्तर हो चुके हैं। (१) स्वायम्भव (२) स्वारोचिष, (३) औत्तमि, (४) तामस (५) रैवत, (६) चाक्षुष, ये छः तो बीत चुके हैं और सातवाँ वैवस्त वर्त्त रहा है और सावर्णि आदि सात मन्वन्तर आगे भोगेंगे। ये सब मिलकर १४ मन्वन्तर होते हैं और इकहत्तर चतुर्युगियों का नाम मन्वन्तर रखा गया है। ऐसे १४ मन्वन्तर एक ब्रह्म दिन में होते हैं और इतना ही परिमाण ब्राह्मी रात्रि का भी होता है। सो उसकी गणना इस प्रकार से है--(१७२८०००) सत्तरह लाख अट्ठाईस हजार वर्षों का नाम सतयुग रखा है। (१२९६०००) बारह लाख छयानवें हजार वर्षों का नाम त्रेता, (८६४०००) आठ लाख चौसठ हजार वर्षों का नाम द्वापर और (४३२००००) चार लाख बत्तीस हजार वर्षों का नाम कलियुग रखा है तथा आर्यों ने एक क्षण और निमेष से लेकर एक वर्ष पर्यन्त भी काल की सूक्ष्म और स्थूल संज्ञा बान्धी है और इन चारों युगों के (४३२००००) तैयालीस लाख बीस हजार वर्ष होते हैं, जिनका चतुर्युगी नाम है। इकहत्तर चर्तुयुगियों के अर्थात् (३०६७२००००) तीस करोड़ सरसठ लाख बीस हजार वर्षों की एक मन्वन्तर संज्ञा की है और ऐसे छः मन्वन्तर मिलकर अर्थात् (१८४०३२००००) एक अरब चौरासी करोड़ तीन लाख बीस हजार वर्ष व्यतीत हुयें और सातवें मन्वन्तर के भोग में यह अट्ठाईसवीं चतुर्युगी है। इस चतुर्युगी में कलियुग के चार हजार नौ सौ छियत्तर वर्षों का तो भोग हो चुका है और शेष (४२७०२४) चार लाख सत्ताईस हजार चौबीस वर्षों का भोग होने वाला है। जानना चाहिये कि (१२०५३२९७६) बारह करोड़ पाँच लाख बत्तीस हजार नौ सौ छियत्तर वर्ष तो वैवस्वत मनु के भोग हो चुके हैं और (१८६१८७०२४) अठारह करोड़ इकसठ लाख सतासी हजार चौबीस वर्ष भोगने बाकी रहे हैं।

महर्षि जी ने आगे लिखा है-'ब्राह्म दिन' और 'ब्राह्म रात्रि' अर्थात् ब्रह्म जो परमेश्वर उसने संसार के वर्तमान और प्रलय संज्ञा की है। इसलिये इसका नाम ब्राह्म दिन है। इसी प्रकरण में मनुस्मृति के श्लोक साक्षी के लिये लिख चुके हैं, सो द्रष्टव्य हैं। इस श्लोकों में दैव वर्षों की गणना की है अर्थात् चारों युगों के (१२०००) बारह हजार वर्षों की दैवयुग संज्ञा है। इसी प्रकार असंख्यात मन्वन्तरों में जिनकी संख्या नहीं हो सकती अनेक बार सृष्टि हो चुकी है, अनेक बार होगी। सो इस सृष्टि को सदा से सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर सहज स्वभाव से रचना, पालन और प्रलय करता है और सदा ऐसे ही करेगा।

मन्वन्तर परिवर्तन: खण्ड प्रलयः- जब एक मन्वन्तर समाप्त होकर दूसरा मन्वन्तर प्रारम्भ होता है तो इस मध्य काल में सृष्टि की क्या स्थिति होती है यही विचारणीय है। हमारे विचार में उस समय खण्डप्रलय का सादृश्य उत्पन्न हो जाता है। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में जब महाप्रलय होता है, उसके पश्चात् आकाशादि क्रम अर्थात् जब आकाश, वायु का प्रलय नहीं होता और अग्न्यादि का होता है, अग्न्यादि क्रम अर्थात् जिस-जिस प्रलय में जहाँ-जहाँ तक प्रलय होता है....इत्यादि लेख में महाप्रलय से अन्यत्र भी प्रलय का होना स्वीकार किया है। यह लेख मन्वन्तरों के मध्य कही गई शास्त्रीय अवान्तर प्रलय का ही बोधक है। यही तथ्य ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में '**मन्वन्तरपर्यावृतौ सृष्टे-नैमित्तिकगुणनामपि पर्यावर्तनं किंचित् किंचित् भवत्यतो मन्वन्तर संज्ञा क्रियते**' इस उद्धरण से भी सूचित किया है।

मीमांसक लोग तो महाप्रलय मानते ही नहीं। उनके मत में खण्ड प्रलय ही होती है, जो कि मन्वन्तरों के

thearyasamaj.org

परिवर्तन काल में होती है।

इस प्रकार सृष्टि विकास में उसके परिवर्तन में खण्ड प्रलय का भी बडा महत्त्व है।

सृष्टि कब से शुरु हुई है? इस विषय में आर्य लोगों का निर्विवाद मत था। महर्षि दयानन्द ने लिखा है- 'कुतोह्यार्यैनित्यम् ओ३म् तत् सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम-चरणेऽमुकसंवत्यरायनर्तुमासपक्षदिननक्षत्रलग्रमुहूर्तेऽत्रेदंकृतं क्रियते च, इत्याबालवृद्धैः प्रत्यहं विदितत्वात्....'

सृष्टि और प्रलय का काल नियम है:- ईश्वरीय नियम ऐसा है कि वह सदा एकरस रहता है, जिसको कोई तोड़ नहीं सकता। एक मन्वन्तर में कितना समय लगना है, खण्ड प्रलय व महाप्रलय कब तक रहती है, यह सब नियत है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्रमा के ग्रहणों, गतियों आदि का जो अनादि काल से क्रम चला आता है वह नित्य है। अतः इन्हें भविष्यकाल में कहना उपयुक्त नहीं। हाँ, मनुष्य की दृष्टि से भविष्यत् काल का प्रयोग किया जाता है। परब्रह्म परमात्मा का अनादिकाल से यह नियम चला आता है कि प्रत्येक सृष्टि और प्रलय की एक-एक कल्प भर की आयु होती है। इससे न न्यून न अधिक। प्रश्न हो सकता है कि इसमें क्या प्रमाण है कि सृष्टि से पूर्व कल्प में भी कोई अन्य सृष्टि थी और उसमें सूर्य-चन्द्रमा आदि सब पदार्थ ईश्वरीय नियमानुकूल इसी प्रकार थे और लोक-लोकान्तरों में भी इसी प्रकार की अन्य सृष्टियाँ हैं और भविष्यत्काल में भी इसी प्रकार की होंगी। इस सम्बन्ध में यह वेद मन्त्र दिखाया जाता है।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

त्रिगुणात्मक जगत्:- जगत् त्रिगुणात्मक है। जहाँ तक प्राकृतिक जगत् का सम्बन्ध है वह सत्व, रजस् और तमस् से ओतप्रोत है। जगदुत्पत्ति तथा उसके विकास को हृदयंगम करने के लिये जीवात्मा, परमात्मा तथा प्रकृति इस त्रयी को समझना परमावश्यक है। इस ब्रह्माण्ड को समझने के लिये युगप्रवर्तक दिव्य दृष्टि ऋषियों ने हमें एक सूत्र पकड़ा दिया है और वह है- **'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे'** अथवा **'यथा पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे'** अर्थात् जो-जो शक्तियाँ ब्रह्माण्ड में हैं वे पिण्ड में भी है। अथवा जो कुछ पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है। पिण्ड से पुरुष पिण्ड अर्थात् पुरुष के शरीर का ही ग्रहण किया गया है। ऐतरेय उपनिषद् में कहा कि- 'पुरुषो वाव सुकृतम् अर्थात् पुरुष सर्वश्रेष्ठ रचना है क्योंकि उसमें ब्रह्माण्ड की सभी शक्तियाँ विद्यमान हैं। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, दिशायें अन्तरिक्ष, द्यौ, भूमि आदि सभी जागतिक देवता अंशरूप में शरीर में विद्यमान हैं।'

अध्यात्म रामायण में जीवात्मा परमात्मा तथा प्रकृति इस त्रिपुटी को निम्न शब्दों में प्रकट किया है-

सूक्ष्मं ते रूपमव्यक्तं देहद्वयविलक्षणम्।
दृग्रूपमितरत् सर्वं दृश्यं जडमनात्मकम्।।
तत् कथं त्वां विजानीयाद् व्यतिरिक्तमतः प्रभो।
हिरण्यगर्भस्ते सूक्ष्मं देहं स्थूलं विराट् स्मृतम्।।
भावना विषयो राम सूक्ष्मं ते ध्यातृ मंगलम्।
भूतं भव्यं भविष्यच्च यत्रेदं दृश्यते जगत्।।

यह जो इतर सब दृश्य रूप जड़ जगत् चक्षुओं का विषय बना हआ है, वह अनात्मक है। अर्थात् आत्मा व्यतिरिक्त है। इस आनात्मक जगत् के स्थूल तथा सूक्ष्म दो रूप हैं परन्तु हे राम, हे प्रभो! तुम्हारा अव्यक्त सूक्ष्मतम रूप तो इन दोनों से विलक्षण है। हिरण्यगर्भ आपका सूक्ष्म शरीर है और विराट आपका स्थूल शरीर है। यह सब भावना विषय है। इस भावना से भावित होकर ध्यानी पुरुष का मंगल होता है। ये स्थूल तथा सूक्ष्मदेह तो कल्पना मात्र है, क्योंकि आप शरीर रहित हैं। परन्तु इस ब्रह्माण्ड को जानने के लिये ऋषियों, मुनियों एवं ज्ञानियों ने **'बहुधा अकल्पयन्'** आपको बहुत प्रकार से कल्पना की है और पुरुष रूप में आपको कल्पित किया है।

जीव और ब्रह्म निराकार व अरूप:- जीव और ब्रह्म निराकार व अरूप होने का यह तात्पर्य नहीं कि उनका अत्यन्ताभाव है। आकार स्थूलता को दर्शाता है। निराकार सूक्ष्मता का वाचक है। जीव ब्रह्म सूक्ष्म होने से स्थूल नेत्रों से दृष्टिगोचर नहीं होते प्रत्युत योगाभ्यास द्वारा वे दिखाई देते हैं। अतः जीव ब्रह्मादि निराकार वस्तुओं को सर्वथा अरूप कहना नितान्त असंगत है। योगियों को योग बल द्वारा जीवात्मा तथा परमात्मा का जो समाधिजन्य प्रत्यक्ष होता है, वह सूक्ष्मतम रूप वाली होनी चाहिये। प्रकृति सूक्ष्म, जीव ओर परमात्मा इनमें से प्रकृति सूक्ष्म, जीव सूक्ष्मतर तथा सूक्ष्मतम है।

इस प्रकार इस सृष्टि सम्वत् के प्रकरण में सृष्ट्युत्पत्ति का समय क्या है? इस पर संक्षेप में विचार किया गया है। गौण रूप से इस प्रसंग में त्रिगुणात्मक जगत्, जीव और ब्रह्म पर भी विवेचन कर दिया गया है।

पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मेरठ कालिज,
मेरठ

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - महर्षि दयानन्द की जरूरत क्यों?

लेखक - आचार्य डॉ. अजय आर्य

प्रकाशक - विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई दिल्ली-११०००६

मूल्य - ५० रु. अजिल्द, ६० रु. सजिल्द **पृष्ठ** - १२८

आज सम्पूर्ण भारत में पाखण्डियों व पोप लीलाओं का साम्राज्य स्थापित है। जिस समय महर्षि इस धरा पर आये उस समय के पाखण्डों ऋषि के बाद और उत्तरोत्तर विशालता स्थापित की है। अनेक नये-नये भागवती हो गये हैं जो मस्त होकर भारतीय जनता को ठगने का कार्य कर रहे हैं। विद्वान् भी उनके गुरु मन्त्र के दास बन रहे हैं। अनेक नये-नये मत-मतान्तर का बोलबाला बढ़ रहा है। सब अपनी-अपनी ढ़पली बजा रहे हैं। साईं बाबा के मन्दिर में अन्धभक्ति का चढ़ावा आ रहा है। करोंथा (हरि.) का रामपाल अपनी करतूतों के कारण जेल की सींखचों में बन्द है। आशाराम अपनी करणी का भोग जेल में भोग रहा है। इन लोगों को देश, राष्ट्र समाज सुधार से कोई अभिप्राय नहीं। सब अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। भोली जनता उनके चुंगल में पिस रही है।

महर्षि दयानन्द की आवश्यकता भी है। उस समय भी थी। आज नितान्त आवश्यकता है। सही मार्ग कैसे प्राप्त हो? देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। अज्ञान, अन्याय और अभाव को दूर करने में हम असमर्थ रहे हैं। अज्ञान, अन्याय, अभाव के समक्ष नतमस्तक हैं। महर्षि के उपकारों को भूलाया नहीं जा सकता। वे अकेले होते हुये अपने ब्रह्मचर्य के बल पर सभी मतावलम्बियों से लोहा लिया। सत्य का मार्ग प्रशस्त किया।

लेखक के हृदय में वेदना है वे चाहते हैं कि अराजकता, अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ, गुरुडम का जो वर्चस्व है वह कम हो सत्य, धर्म, श्रद्धा की वास्तविकता को समझे। क्रोध को दूर भगाएँ। जीवन को उत्तम एवं श्रेष्ठ बनाएँ। परमपिता परमात्मा को न भूले। बड़ों का आदर सम्मान करना सीखें। महर्षि के बताए मार्गदर्शन को जीवन में उतारें। कर्त्तव्य पथ पर खरे उतरें। डॉ. अजय आर्य की लेखनी के भावों को समझें- महर्षि दयानन्द की जरूरत क्यों है, इसे समझें व आत्मसात कर अन्यों को भी समझायें।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का निःशुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमशः हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959

thearyasamaj.org

श्री ज्ञानेन्द्र देव सूफी का संक्षिप्त जीवन परिचय

यह सम्पूर्ण जानकारी स्वयं ज्ञानेन्द्र देव जी ने रामपुरा बाजार, कोटा में लगभग १९५५-५६ के आसपास अपने भाषण के द्वारा दी थी।

- रामकिशोर शर्मा

गोरखपुर (उ.प्र.) में एक भड़भूजा, राम खिलावन नाम का रहता था। पैसे आदि की कोई कमी नहीं थी। धन-धान्य से भरपूर था। लेकिन एक कमी उसके जीवन में सदा कष्ट कारक बनी रहती थी। उसके कोई सन्तान नहीं थी। सन्तान की प्राप्ति के लिए उसने जो भी अच्छे-बुरे कर्म करने चाहिए थे, वह सब किये। यहाँ तक कि देवी-देवताओं, पीर-मजार आदि के नाम पर (बकरे, मुर्गों, अण्डे, मांस आदि) खूब धन व्यय किया। लेकिन इतनी हत्याओं के पश्चात् भी उसको निराशा ही हाथ लगी। जब वह थक कर निराश होकर बैठ गया, तो कुछ समय बाद एक पण्डे ने राम खिलावन से कहा कि अरे भाई, तुमको निराश होने की आवश्यकता नहीं है। देवी माता के मन्दिर में अनुष्ठान करने पर माता तुम पर प्रसन्न होकर सन्तान की प्राप्ति अवश्य करायगी। लेकिन माता को प्रसन्न करने के लिए तुमको एक बकरा, इतने मुर्गे और अण्डा, मदिरा आदि का भोग लगाना पड़ेगा। उस भोले-भाले व्यक्ति को पण्डे बहला-फुसला कर ले गये और रात को एक धर्मशाला में ठहरा दिया। अनुष्ठान दूसरे दिन सुबह करने को कहा गया। धर्मशाला के पीछे आम मार्ग एक मैदान की ओर जाता था। राम खिलावन ने देखा कि सायं को ५-६ बजे हजारों व्यक्ति अपने उपलब्ध साधनों या पैदल ही मैदान की ओर आगे चले जा रहे हैं। उसने पण्डे से पूछा कि भाई ये लोग कहाँ भागे जा रहे हैं। पण्डे ने उत्तर दिया कि मैदान में एक नास्तिक आया हुआ है, जो देवी-देवताओं को गाली देता है, भगवान को नहीं मानता, भागवत और पुराणों को भी नहीं मानता। तू वहाँ मत जाना। पण्डे ने देखा कि यह चला गया तो बना बनाया काम बिगड़ जाएगा। भड़भूजा ने सोचा कि इतने लोग भागे चले जा रहे हैं। क्या यह सब मूर्ख हैं? वह चला गया, मैदान खचा- खच भरा हुआ था। वह भी जाकर बैठ गया। वहाँ महर्षि दयानन्द जी का प्रवचन चल रहा था। देव योग से प्रवचन का विषय भी यही था कि ईश्वर को सन्तान देनी होती तो पहले ही दे देता, लेकिन एक सन्तान की प्राप्ति के लिए अनुचित तरीके से कितनी ही उस ईश्वर की सन्तानों की हत्या कर दी जाती है। कितना बड़ा पाप है। यह पाप कभी क्षमा योग्य नहीं है। स्वामी जी ने वेदों एवं अन्य मान्य ग्रन्थों का उदाहरण देकर इस विषय में प्रकाश डाला। प्रवचन समाप्त होने पर लोग उठकर चले गये और भड़भूजा मैदान में एक ओर बैठा रो रहा था।

स्वामी जी ने मंच से मैदान पर नजर डाली तो एक व्यक्ति बैठा हुआ जोर-जोर से रो रहा है। स्वामी जी ने मंच से उतर कर, उसको गले से लगा लिया और राम खिलावन से रोने का कारण पूछा तो उसने आदि से अन्त तक सारा वृत्तान्त सुना दिया। स्वामी जी ने उसको वैदिक धर्म का उपदेश देकर सान्त्वना देकर घर भेज दिया।

इस प्रकार वह पण्डों के चंगुल से निकल कर अपने घर लौट आया और वैदिक धर्म के अनुयाइयों से सम्मति लेकर, अपने घर के एक बड़े कमरे में, एक बहुत बडा आर्य साहित्य का पुस्तकालय खोल दिया। जिसमें वेदों से लेकर सत्यार्थप्रकाश आदि छोटी-बड़ी सभी पुस्तकें विद्यमान थी। इसमें एक सबसे बड़ी विशेषता यह थीं कि वह स्वयं अनपढ़ था। कमरे के बीच में खाट बिछाकर बैठ जाता था और नगर के बच्चों को लालच देकर पुस्तक पढ़वाता था। किसी को कहता तुमको दूध पिलाऊँगा तुम यह पुस्तक पढ़ो, किसी को कहता तुमको मिठाई अथवा जलेबी देशी घी की खिलाऊँगा। इस प्रकार बच्चे आते गये और आर्य साहित्य का अध्ययन करने लगे। स्वयं खाट पर बैठकर एक पुस्तक बच्चों से पढ़वाता और स्वयं भी ज्ञान प्राप्त करता।

इस प्रकार उसने जीवन में सन्तान प्राप्ति के लिए जो पाप किये थे, उनका प्रायश्चित किया। कुछ समय बाद एक मुसलमान लड़का भी आने लगा। राम खिलावन ने उसको सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को दिया और कह दिया कि फलां हलवाई की देशी घी की जलेबी खिलाऊँगा। उसने जब सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा कि पुनर्जन्म होता है और कर्मानुसार अगले जन्म में भोग भोगने पड़ते हैं। पिछले जन्मों के आधार पर ही कोई काना, लूला, अंधा, लंगडा आदि जन्म लेता है। जैसे ही पिछले कर्मों का अन्त होता है या तो वह

thearyasamaj.org

मृत्यु को प्राप्त होता है, या ठीक हो जाता है। मुसलमानों में दूसरा जन्म नहीं माना जाता। उस बच्चे ने घर जाकर अपने बाप से इस बारे में पूछा तो बच्चे को थप्पड़ जड़ दिया। बाप माना हुआ मौलवी था। बच्चे से कहा कि तू उस भड़भूंजा के पास जाता दिखता है। बच्चे पर इसका कोई असर नहीं हुआ क्योंकि पाव भर जलेबी का लालच जो दिया गया था। इस लालच में बच्चे को सम्पूर्ण सत्यार्थप्रकाश पढ़ने पर विवश कर दिया। इसका बच्चे के जीवन पर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि उसने इस्लाम मजहब का परित्याग करके वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण कर ली। इस समय वह बालक से युवा होकर ज्ञानेन्द्र देव सूफी बन गया था। इनके दो बच्चियाँ थी। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अब समस्या उनके विवाह की सामने आई, लेकिन ईश्वर ने यह समस्या भी हल कर दी। दक्षिण भारत की एक महिला ने यह कहकर बच्चियों को स्वीकार कर लिया कि तुमने तो बहुत बड़ा बलिदान किया है। हम आपकी बच्चियों को भी स्वीकार नहीं करेंगे क्या? अब सूफी जी ने जीवन में परिवार की समस्याओं से मुक्त होकर वैदिक धर्म के प्रचार में कदम बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। यह उनके जीवन का परम लक्ष्य था। ऋषि के मिशन को नया आयाम देते हुए, धुँआधार प्रचार किया और कुरान और मोहम्मद सा. के सिद्धान्तों का जमकर विरोध किया। इससे चिढ़कर पाकिस्तान की सरकार ने उसको पाकिस्तान बुलाने को बड़े-बड़े प्रलोभन दिये। लेकिन इस महापुरुष ने स्पष्ट रूप से यह कहकर मना कर दिया कि अब मैं दुबारा उस दलदल में नहीं घुसूँगा।

इससे आगे सूफी जी के जीवन ने एक नया मोड़ लिया। वह वैदिक धर्म के गहन सार में डुबकी लगाते हुए विचार मंथन में डूब गये। सोचने लगे ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में जो यह लिखा है कि आर्यों का सारे संसार में चक्रवर्ती साम्राज्य था। तो मन में प्रश्न उठा कि सउदी अरब में कहाँ था? यह प्रश्न मन में बार-बार कोधने लगा। और महर्षि के इस कथन की सच्चाई जानने के लिए मक्का-मदीना जाने की ठान ली। इससे पूर्व हजारों ऋर्षि भक्तों ने कितनी ही बार सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन किया लेकिन क्या किसी के मन में विचार आया? अब समस्या विकट आई कि सऊदी यात्रा के लिए पैसा पास में नहीं और दूसरी समस्या हिन्दू होने के कारण पासपोर्ट नही मिल सकता। जब मनुष्य किसी शुभ काम करने की ठान लेता है तो ईश्वर उसका सबल बनकर सहायता करता है। यही हुआ ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। जुगलकिशोर जी बिरला ने उनको सऊदी यात्रा का आने-जाने का मार्ग व्यय उठाया। दूसरी समस्या पासपोर्ट की तो सूफी जी मिश्र के बादशाह के साथ मक्का पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर उनको एक तम्बू में ठहराया गया। जिस तम्बू में उनको ठहराया गया, उसमें पिता जी पहले से ठहरे हुए थे। उनको बड़ा डर लगा कि कहीं इन्होंने पहचान लिया तो मृत्यु दण्ड निश्चित है। उन्होंने वहाँ छुप कर देखा तो उनके पिता जी अपने शरीर से जूँ बीन-बीन कर एक दोने में इकट्ठा कर रहे थे। उनको एक दूसरे हाजी के शरीर पर बिखेर रहे थे। इससे सिद्ध हुआ कि वहाँ किसी प्रकार की हिंसा करना महा पाप है। जहाँ हाजी लोग सामुहिक नमाज अदा करते हैं, उस मजिस्द के ६ मील के एरिया में किसी प्रकार की हिंसा नहीं होती।

सूफी जी ने उक्त दोनों उदाहरणों से यह अनुभव किया कि यहाँ हमारा वैदिक धर्म विद्यमान था। एक उदाहरण उन्होंने और दिया जो आंखों से देखा कि हाजी लोग बोस लेने की होड़ में एक दूसरे के ऊपर पड़ रहे थे उसी भीड़ में एक मारवाड़ी मुसलमान ने अपने सिर की पगड़ी उतारी और पूरी ताकत से शिवालय की ओर फेंक दिया। चारों तरफ से आवाज आई, छू गई, छू गई, बस फिर क्या था, उस मारवाडी के हाथ में जो टुकड़ा पगड़ी बचा था उसी से सन्तुष्ट था। क्योंकि पगड़ी के टुकडे-टुकडें हो गये थे।

आप इसे आस्था कहें या अन्धविश्वास। यह आपके विवेक पर छोड़ता हूँ।

सूफी जी की इस खोजपूर्ण यात्रा का आगे का वृत्तान्त परोपकारी के अंक द्वितीय जुलाई २०१०, प्रथम व द्वितीय अगस्त २०१० एंव प्रथम सितम्बर २०१० पर देखें।

१. ज्ञानेन्द्र देव जी का पूर्व नाम- मौलाना हाजी मौलाना अब्दुल रहमान

२. अरब की यात्रा १९२५ में की थी।

३. मस्जिद का नाम - अल्-अहराम।

४. मस्जिद के बीच में जो एक चौकोर भवन है, उसको कावा कहते हैं । जिसकी लम्बाई ३५ फीट और चौड़ाई २८ फीट है।

५. इसमें जो मूर्ति है उसका नाम हिज्र-अल-अस्वद है। अन्त में इस महापुरुष को बार-बार नमन करता हूँ। जिसने अपने गुरु ऋषि दयानन्द का आदेश पाकर इतने बड़े इतिहास की खोज की हैं।

- ८२/१४२, नीलगिरी, मानसरोवर, जयपुर

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१६ से ३० नवम्बर २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचनः- परमपिता परमेश्वर की कृपा से, सभा कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से व आप सभी के सहयोग से पिछले दिनों भी सभा की सभी गतिविधियाँ यथा- प्रातः सायं यज्ञ, प्रवचन, गुरुकुल-अतिथियों-आश्रमवासियों के लिए भोजन, गौशाला, चिकित्सालय, परोपकारी पत्रिका व अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन, जनसम्पर्क व प्रचार कार्यक्रम आदि यथावत चलती रही।

अपने प्रातःकालीन प्रवचन क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** ने सामनस्यम् सूक्त (अथर्ववेद ३/३०) की व्याख्या प्रस्तुत की। इसके चतुर्थ मन्त्र-

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि यहाँ देवताओं के दो गुणों का स्पष्ट वर्णन है, पहला- **न वियन्ति** और दूसरा- **न च विद्विषते मिथः।** मन्त्रानुसार जिस समझ के कारण देवता परस्पर ऐसा आचरण करते हैं (अर्थात् **न वियन्ति**= परस्पर एक दूसरे से विमुख नहीं होते और **न च विद्विषते मिथः**= परस्पर द्वेषभाव नहीं रखते हैं।) उस समझ को हमें भी अपने जीवन, परिवार, समाज में अपनाने की आवश्यकता है।

अपने प्रवचन क्रम में **आचार्य सनत्कुमार जी** ने **'वैदिक जीवन विज्ञान'** की व्याख्या करते हुए विभिन्न विषयों को स्पष्ट किया। मन्त्र

पृथक्प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः।।

(ऋग्वेद १०/४४/६)

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि यह मन्त्र स्पष्ट कहता है कि जो नियम, धर्म के अनुसार चलने वाले मनुष्य हैं वे मोक्ष को ले जाने वाली नौका से तर जाते हैं, इसके अतिरिक्त जो मनुष्य हैं वे इस नौका को छू भी नहीं पाते हैं। यहाँ नाव का विशेषण है- **यज्ञियाम्** अर्थात् यह तराने वाली नौका यज्ञीय है, यज्ञ से पैदा की गई है। तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह यज्ञ क्या है? महर्षि दयानन्द आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त जो शिल्प व्यवहार और जो पदार्थ विज्ञान है जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है, उसको यज्ञ कहते हैं। पुनः आचार्य जी ने इस परिभाषा की व्याख्या करते हुए बताया कि जितने भी सत्कर्म हैं वे सभी यज्ञ हैं अर्थात् विधिपूर्वक किया गया भोजन, भाषण, चिन्तन भी यज्ञ होता है।

स्वामी ध्रुवदेव जी ने

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

(ऋग्वेद ७/५९/१२)

मन्त्र की व्याख्या करते हुए बताया कि ईश्वर **त्र्यम्बकम्** है अर्थात् उसका ज्ञान तीनों कालों में एक जैसा रहता है। जैसे हम मनुष्य अपने अज्ञान के कारण गलत आहर-विहार करके रोगी हो जाते हैं और कष्ट उठाते हैं और फिर विचार करते हैं कि आगे से ऐसा नहीं करेंगे। लेकिन पुनः स्वस्थ होने पर कुछ दिनों के बाद वैसे ही पूर्व की भाँति गलत आहार-विहार करने लगते हैं। हमारा ज्ञान जैसा कष्ट की स्थिति में था, वैसा अकष्ट की स्थिति में नहीं होता लेकिन इसके विपरीत ईश्वर का ज्ञान सदैव एक जैसा रहता है। **त्र्यम्बकम्** अर्थात् वह सभी स्थानों में एक रस है और वह ईश्वर सबका अधिष्ठाता है। वह सुगन्धि और पुष्टि करने वाला अर्थात् क्षमा, दया, उत्साह, आनन्द जैसे गुणों का देने वाला तथा शरीर व आत्मा के बल को बढ़ाने वाला है। उस ईश्वर का **यजामहे**= हमें निरन्तर सत्कार करना चाहिए। यहाँ निरन्तरता पर बल देते हुए स्वामी जी ने बताया कि **स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव** अर्थात् जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु आदि निरन्तर बिना विश्राम किए अपना कार्य करते रहते हैं उसी प्रकार हम भी उस परमात्मा का सत्कार करते रहें। ऐसा करने पर ही व्यक्ति पक सकता है और जैसे एक पका हुआ फल सुख और आनन्द देता है उसी प्रकार वह मनुष्य भी दूसरों को सुख व आनन्द देता है।

आचार्य सत्यव्रत जी ने ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के छठें मन्त्र-

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यासि। तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।

की व्याख्या करते हुए बताया कि परमात्मा देने वाले का कल्याण करता है। अतः हमें परमात्मा को निरन्तर देना चाहिए। क्योंकि जो परमात्मा को देता है परमात्मा उसके दोष भी हटा देता है और जो परमात्मा को नहीं देता, उसके गुण भी नष्ट हो जाते हैं। हम परमात्मा को क्या दे सकते हैं?

thearyasamaj.org

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आचार्य जी ने बताया कि हम अपने दुर्गुणों को परमात्मा को दे सकते हैं, हम धर्म में चलकर अपने सत्कर्मों को परमात्मा को दे सकते हैं और वैराग्य के पथ पर चलकर अपने निष्काम कर्मों को परमात्मा को दे सकते हैं।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में ब्र. रविशंकर जी ने बताया कि कोई नास्तिक हम आस्तिकों से यह पूछ सकता है कि जो तुम ये ईश्वर, धर्म आदि की रट लगाते रहते हो, इसका लाभ क्या है? इन प्रश्न का उत्तर देते हुए आपने बताया कि वस्तुत: जीवात्मा सुख चाहता है और ईश्वर, धर्म को मानने पर ही व्यक्ति पूर्णत: सुखी हो सकता है। तो हम अपने सुख के लिए ईश्वर को मानते हैं और धर्म में चलते हैं। इसलिए हमारे यहाँ कहा जाता है कि **धर्म से सुख होता है और अधर्म से दु:ख होता है।** आपने बताया कि दर्शन ग्रन्थों को पढ़ने से जब बुद्धि खुलती है तो नई-नई बातें समझ में आती है कि यद्यपि धर्म से सुख होता है और अधर्म से दु:ख होता है लेकिन हम ये सिद्धान्त नहीं बना सकते कि जहाँ-जहाँ सुख हो रहा है वहाँ-वहाँ धर्म हो रहा है और जहाँ-जहाँ दु:ख हो रहा है और वहाँ-वहाँ दु:ख है क्योंकि आज कि परिस्थिति में ही देखें तो कोई अन्याय पूर्वक साधनों को ग्रहण कर सुखी हो सकता है या किसी धार्मिक को भी अधर्मपूर्वक दु:खी किया जा सकता है। इन तात्कालिक परिणामों के होते हुए भी धर्म अन्तत: सुख ही लाता है और अधर्म दु:ख ही लाता है। ऐसी परिस्थिति में (अर्थात् जब किसी को बलात् दु:खी किया जा रहा हो या किसी योग्य को सुख से वंचित किया जा रहा हो तो) यदि वह व्यक्ति आस्तिक है और ईश्वर के सच्चे स्वरूप को मानता है, उसकी न्यायकारिता पर विश्वास करता है तो अन्य नास्तिकों की अपेक्षा वह इस स्थिति को आसानी से सह जाएगा। यह ईश्वर को मानने का ही परिणाम है।

ऋषि उद्यान में रहकर न्यायदर्शन का अध्ययन कर रहे युवक **आशुतोष जी** ने अपने प्रवचन क्रम में दुर्जनों के स्वभाव और भारतीय शिक्षा पद्धति और पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक विवेचन किया। आपने दृष्टान्त के माध्यम से बताया कि किसी गाँव में एक व्यक्ति था जिसकी दो पत्नियाँ थी। पहली पत्नी की एक बच्ची थी और दूसरी पत्नी नि:सन्तान थी। किसी कारणवश पहली पत्नी की मृत्यु हो गई। अब उस बच्ची की देखभाल उसकी सौतेली माँ करने लगी। वह सौतेली माँ उस बच्ची से इतना प्यार करती की उसे एक पल भी अपने से दूर नहीं जाने देती, दिनभर उसे अपनी गोद में लिए इधर-उधर घूमती पर गोदी से अलग नहीं करती, इस बात की चर्चा पूरे गाँव में होने लगी। सभी कहते कि माँ हो तो ऐसी जो सौतेली होते हुए भी सगी माँ से भी ज्यादा प्यार करती है। कुछ दिन बीत गए एक दिन उस सौतेली माँ की एक सहेली उससे मिलने आई, बातों ही बातों में सहेली ने पूछा- सखी! एक बात तो बता, ये तेरी बच्ची तो है नहीं, फिर भी तू इसे इतना चाहती है, इसका इतना ध्यान रखती है, इसको एक पल के लिए भी अपने से दूर जाने नहीं देती? सौतेली माँ हँसती हुई जवाब देती है- ''जिस दिन मैंने इसे अपने से दूर कर दिया इसके हाथ-पाव काम करने लग जाएँगे, ये खुद से सोचने लग जायेगी, बोलने लग जाएगी जो कि मैं नहीं चाहती। मैं तो इसे पङ्गु बनाना चाहती हूँ, अपने हाथ की कठपुतली बनाना चाहती हूँ और ये ही मेरा मेरी सौतन के लिए मेरा प्रतिशोध है।'' इस दृष्टान्त से जो दो बात समझ में आती हैं उनमें पहली है कि दुर्जन प्रतिशोध लेने के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं और दूसरी यह कि हमारे प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने वाला हमारा हितैषी ही होगा, यह आवश्यक नहीं। पुन: कहानी की दूसरी शिक्षा को और विस्तृत करते हुए आपने बताया कि आज हमारे समाज में विधर्मी लोग विशेषकर ईसाई समुदाय विद्यालय, चिकित्सालय आदि जनकल्याणकारी कार्यों का चोला ओढ़कर धर्मान्तरण का कार्य करते हैं। वर्तमान में भारत में चल रही शिक्षा पद्धति को भी इसी सन्दर्भ में देखना चाहिए। जहाँ व्यक्ति को धनोपार्जन का ही लक्ष्य देकर उनकी सोचने समझने की शक्ति को अवरुद्ध कर, उन्हें एक अच्छा नौकर बनाया जाता है, इसके विपरीत हमारी वैदिक शिक्षा पद्धति- **'सा विद्या या विमुक्तये'** के मन्त्र में विश्वास रखती है।

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम-

सम्पन्न कार्यक्रम- (क) २३ से २६ नवम्बर २०१४- हैदराबाद सत्याग्रह में आर्यसमाज के प्रथम बलिदानी वेदप्रकाश जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने हेतु, उनकी जन्मभूमि गुंजोटी, ता. उमरगा, जि. धाराशिव, महा. में परोपकारिणी सभा एवं महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली बैजनाथ, महा. के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम- (क) १६ से १८ दिसम्बर २०१४- आर्यसमाज जागृति विहार, मेरठ के कार्यक्रम में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

thearyasamaj.org

(ख) २० से २८ दिसम्बर २०१४- आर्यसमाज विधान सरणी, कोलकाता के कार्यक्रम में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

३. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-

सम्पन्न कार्यक्रम- (क) १९ से २३ नवम्बर २०१४- आर्य समाज मेरठ में लोगों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

(ख) २४ व २५ नवम्बर २०१४- आर्य समाज लखनऊ में व्याख्यान प्रदान किया।

(ग) २७ से २९ नवम्बर २०१४- सांगीर पाईप कम्पनी वापी, गुजरात में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न कराया।

(घ) ३० नवम्बर २०१४- बांगड नगर, गोरेगाँव, मुम्बई में श्रीमान् रामकुमार जी मान्धाना के कार्यालय के उद्‌घाटन के अवसर पर यज्ञ एवं प्रवचन।

४. पं. नौबतराम जी का प्रचार कार्यक्रम- परोपकारिणी सभा के भजनोपदेशक, प्रचारक पं. नौबतराम पिछले दिनों बिहार, बंगाल, दार्जिलिंग, नेपाल के क्षेत्र में अपने प्रचार कार्यक्रम में थे। इस दौरान आपने आर्यसमाजों, आर्यपरिवारों, आर्य सज्जनों से सम्पर्क किया तथा नए लोगों को आर्यसमाज का परिचय कराया। आपकी यात्रा इस प्रकार रही:-

(क) कोलकाता में- १५ मई २०१४ को अजमेर से चलकर आर्यसमाज विधानसरणी, कोलकाता को केन्द्र बनाकर लोगों से सम्पर्क किया। आर्यसमाज बड़ा बाजार, आर्यसमाज विद्यासागर, धर्मतल्ला आदि में आर्यजनों से भेंट की।

(ख) सिलीगुड़ी में- पुनः कोलकाता से २३ मई २०१४ को सिलीगुड़ी आर्यसमाज पहुँचकर पारिवारिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग आदि में आर्यजनों से सम्पर्क किया, भजन आदि के माध्यम से उन्हें प्रेरणा प्रदान की। इस दौरान भूटान की सीमा से लगते हुए सीमावर्ती ग्रामों में भी कार्यक्रम होते रहे। पुन: सीमावर्ती आर्यसमाज चामूर्चि बाजार के प्रधान श्री हरि गजने से सम्पर्क किया, आपके मार्गदर्शन में अनेक आर्यसमाजों में जाने का अवसर मिला, भूटान के अन्दर भी जहाँ तक जाया जा सकता था, वहाँ तक जाकर लोगों से सम्पर्क किया। इसी दौरान एक अन्य सीमावर्ती समाज में (आर्यसमाज वीरपाड़ा) में समाज के संस्थापक सदस्य श्री राजेश जी शास्त्री से मिले। आपने अपनी भूमि दान में देकर आर्यसमाज के भवन का निर्माण कराया, आप दोनों पति-पत्नी निरन्तर वैदिक धर्म के प्रचार में लगे हुए हैं। पुन: सिलीगुड़ी में वापस आकर अनेकों जगह यज्ञ-प्रवचन का कार्यक्रम करते रहे।

(ग) नेपाल में- सिलीगुड़ी में ६ जून को अपना कार्यक्रम समाप्त कर ७ जून २०१४ को रात्रि १२ बजे नेपाल के जोगवनी नामक स्थान पहुँचे। यहाँ जिन सज्जन से भेंट करनी थी उनसे सम्पर्क नहीं हो पाया अत: रात्रि स्टेशन में गुजारी, पुन: प्रात: काल गुरुकुल विराट नगर पहुँचे। गुरुकुल विराट नगर से आर्यसमाज जतुवा (जि. मोरंग, नेपाल) वेदमन्दिर, आर्यसमाज (जि. सुनसरी, नेपाल) आर्यसमाज इनर्वा, आर्यसमाज गौतमपुर आदि में लोगों से सम्पर्क कर, यज्ञ-प्रवचन-भजन आदि के माध्यम से उन्हें प्रेरणा दे वापस गुरुकुल विराट नगर आ गए। पुन: आर्यसमाज जोगवनी को केन्द्र बनाकर आर्यसमाज साहेब गंज, आर्यसमाज दूबी, आर्यसमाज कप्तानगंज, आर्यसमाज फारविस गंज, रामपुर वसवाड़ा आदि में प्रचार कार्य किया। आर्यसमाज फारविस गंज में निकटवर्ती सोलह आर्यसमाजों का संयुक्त कार्यक्रम हुआ, इस कार्यक्रम में भी भजन प्रस्तुति दी।

पुन: २५ जून से ८ जुलाई २०१४ तक आर्यसमाज काठमाण्डू में प्रचार कार्यक्रम चलता रहा। २५ से २९ जून २०१४ को आर्यसमाज काठमाण्डू का वार्षिकोत्सव भी था, इस दौरान काफी संख्या में लोगों को भजनों के माध्यम से प्रेरणा देते रहे, आर्यजनों से भेंट होती रही।

(घ) बिहार में- ८ जुलाई २०१४ को नेपाल में अपना प्रचार कार्यक्रम समाप्त कर वहाँ से बिहार की ओर प्रस्थान किया। आर्यसमाज वीरगंज, रक्सोल, दरभंगा, समस्तीपुर, जोगवनी, कटिहार, बरौनी आदि होते हुऐ १५ जुलाई को अलीगढ़ पहुँचे।

(ङ) उत्तर प्रदेश में- १५ जुलाई से १० सितम्बर २०१४ तक आर्यसमाज अचल मार्ग, अलीगढ़ को केन्द्र बनाकर प्रचार किया। इस दौरान समाज के श्रावणी-वेद प्रचार कार्यक्रम, दशहरा उत्सव आदि में सम्मिलित रहे। पुन: यहाँ से १२ सितम्बर २०१४ को ऋषि उद्यान, अजमेर आकर अपनी यात्रा समाप्त की और अगली यात्रा की तैयारी में जुट गये। इति।।

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० नवम्बर २०१४ तक)

१. श्रीमती मधुरभाषिणी कपूर, जयपुर २. श्रीमती कौशल्या देवी, सोनीपत, हरि. ३. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ४. श्री भास्करसेन गुप्ता, बैंगलूर, कर्नाटक ५. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ६. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली ७. श्री दिनेश नवाल, अजमेर ८. श्री राजेन्द्रसिंह, नई दिल्ली ९. श्रीमती सुशीला खयालिया, हिसार, हरि. १०. श्री राकेश कुमार आर्य, लखनऊ, उ.प्र. ११. श्री अशोक कुमार आर्य, ब्यावर, राज. १२. श्री देवमुनि, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० नवम्बर २०१४ तक)

१. श्री जे.पी. ट्रांसपोट, ठाने, महा. २. श्री संकल्प, सोनीपत, हरि. ३. श्रीमती प्रेरणा, सोनीपत, हरि. ४. श्रीमती प्रगति अरोड़ा, जयपुर, राज. ५. श्रीमती सुशीला खयालिया, हिसार, हरि. ६. श्रीमती सुमन शर्मा, नागौर, राज.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्न पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट	६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट	४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट	५५०.००
	१७	योग	१६३५.००

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा

खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

बचत खाता संख्या- 0008000100067176,

बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर

आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के द्वारा भेज सकते हैं।

thearyasamaj.org

वेदों की बातें

- रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

१. **सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते।** (ऋग्वेद, १०.१७.७)
देवत्व की कामना वाले सरस्वती (ज्ञान) का आह्वान करते हैं।

२. **स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।** (ऋग्वेद, ५.५१.१४)
सूर्य और चाँद सदा अपनी निश्चित दिशा में और निश्चित गति से ही चलते रहे हैं।

३. **आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।** (ऋग्वेद, १.८९.१)
हमें सब ओर से भले विचार प्राप्त हों।

४. **शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।** (ऋग्वेद, १०.१८.२)
शुद्ध पवित्र और परोपकारी जीवन के धनी बनो।

५. **भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।** (अथर्व. १२.१.६३)
हे सब के मातृसमान पृथ्वी! हम अपने देश में पूर्ण अधिकार से युक्त रहें। हमें कोई दूसरा दबा न सके।

६. **आयुतोऽहम् अयुतो म आत्मा।** (अथर्व. १९.४१.१)
मैं दीन-हीन न बनूँ। मैं सब प्रकार से सम्पन्न बनूँ।

७. **तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।** (यजु. ४०.७)
अभेदभाव देखने वाले को क्या मोह और क्या शोक?

८. **आक्राम पर्वतादधि पर्वतम्।** (अथर्व. १५.२३.५)
एक चोटी से दूसरी चोटी पर पहुँचो।

९. **अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः।** (ऋग्वेद, १०.५३.८)
जो हानि करने वा. रिवाज हैं, उनको अब हम छोड़ दें।

१०. **विद्ययाऽमृतमश्नुते।** (यजु. ४०.११)
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

११. **अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्याः।** (यजु. २.१०)
हमारी कामनाएँ फल लाएँ।

१२. **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।** (यजु. ४०.२)
कर्म करते हुए पूरी आयु पाने की इच्छा करनी चाहिए।

१३. **उत्क्राम महते सोभगाय।** (यजु. ११.२१)
दुर्बलताओं से ऊपर उठकर चलो ताकि महान् ऐश्वर्य पा सको।

१४. **ओजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्।** (यजु. ८.३९)
मैं समाज में अधिकतम बल और शक्ति का स्वामी बनूँ।

१५. **अश्रद्धामनृतेऽदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।** (यजु. १९.७७)
परमेश्वर ने झूठ में अविश्वास और सत्य में विश्वास को स्थापित किया है।

१६. **स्वादो पितो मधो पितो वयं त्वा ववृमहे। अस्माकमविता भव।** (ऋग्वेद १.१८७.२)
हे स्वादु अन्न! हे मधुर अन्न! हम तुझे स्वीकार करते हैं। अपनाते हैं। तू हमारा रक्षक और पोषक बन।

१७. **भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः। पराजितासो अप निलयन्ताम्।।** (ऋग्वेद, १०.८४.७)
हमारे शत्रु हम से पराजित होकर डर के मारे दूर भाग जाएँ।

१८. **उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूताः।** (अथर्व. १२.१.६२)
हे मातृभूमे, हम रोग-रहित और स्वस्थ होकर सदा तेरी सेवा करें।

१९. **नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।** (यजु. ३६.२१)
हे प्रभो! बिजली की कड़क तथा चमक में और बादल की गड़गड़ाहट में तेरा ही रूप विद्यमान है।

२०. **यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न विभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः।** (अथर्व. २.१५.३)
हे मेरे प्राण! जैसे सूर्य और चन्द्रमा अपने कर्त्तव्य-पालन में न डरते हैं और न थकते हैं। इसी तरह मैं भी किसी से न डरूँ और न ही कभी आलस्य करूँ।

२१. **सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति। य एनं देवमेकवृतं वेद।** (अथर्ववेद १३.४.२१)
इस ईश्वर में सभी देवता एक रूप हो जाते हैं। इस प्रकार एकीभूत ईश्वर को जो जानता है वह ज्ञानवान् है।

२२. **सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।** (ऋग्वेद १०.१९१.२)

thearyasamaj.org

आपस में मिलकर रहो, सप्रेम वार्तालाप करो और एक-दूसरे के मन को समझो।

२३. **मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय।**

(यजु. ३९.४)

मेरे मन की कामना पूर्ण हो। मुझे सत्प्रेरणा प्राप्त हो। मेरे वचन में सच्चाई हो।

२४. **यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।।**

(यजु. २०.२५)

जिस देश में ब्राह्मण और क्षत्रिय अथवा ज्ञान और बल साथ-साथ चलते हैं वह देश पवित्र है।

२५. **भद्रं मनः कृणुष्व।** (सामवेद १५६०)

हे प्रभु! हमारे मन को कल्याण-मार्ग में प्रेरित करें।

२६. **भद्रा उत प्रशस्तयः।**

(सामवेद १११)

हमें कल्याणकारी स्तुतियाँ प्राप्त हों।

२७. **वि रक्षो वि मृधो जहि।** (सामवेद १८६७)

राक्षसों और हिंसक शत्रुओं का नाश करो।

२८. **जीवा ज्योतिरशीमहि।** (सामवेद २५९)

हम शरीरधारी प्राणी विशिष्ट ज्योति को प्राप्त करें।

२९. **न सन्तु सनिषन्तु नो धियः।** (सामवेद ५५५)

हमारी देव-विषयक स्तुतियाँ देवताओं को प्राप्त हों।

३०. **विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञम्।**

(सामवेद ६१०)

सम्पूर्ण देवगण मेरे मान करने योग्य पूजन को स्वीकार करें।

३१. **अहं प्रवदिता स्याम्।** (सामवेद ६११)

मैं सर्वत्र प्रगल्भता से बोलने वाला बनूँ।

३२. **यः समर्यति तस्य प्राविता भव।**

(सामवेद ८४५)

जो तेरी पूजा करता है, उसका तू रक्षक हो।

३३. **मनौ अधि पवमानः राजा मेधभिः अन्तरिक्षेण यातवे ईयते।**

(सामवेद ८३३)

मनुष्य में शुद्ध होने वाला अपनी बुद्धि से उच्च मार्ग से जाने की कोशिश करता है।

३४. **जनाय उर्जं वरिवः कृधि।**

(सामवेद ८४२)

लोगों में श्रेष्ठ बल पैदा करो।

३५. **पुरन्धिं जनय**

(सामवेद ८६१)

बहुत से उत्तम कर्म करने में समर्थ बुद्धि को उत्पन्न करो।

३६. **विचर्षणिः, अभिष्टिकृत्, इन्द्रियं हिन्वानः, ज्यायः महित्वं आनशे।**

(सामवेद ८३९)

विशेष ज्ञानी और इष्ट की सिद्धि करने वाला अपनी शक्ति को प्रयोग में लाकर श्रेष्ठत्व प्राप्त करता है।

३७. **ऋतावृधौ, ऋतस्पृशा बृहन्तं क्रतुं ऋतेन आशाथे।**

(सामवेद ८४८)

सत्य बढ़ाने वाले, सत्य को स्पर्श करने वाले सत्य से ही महान् कार्य करते हैं।

३८. **यः सखा सुशेवः अद्वयुः।**

(सामवेद ८४९)

जो उत्तम मित्र, उत्तम प्रकार से सेवा के योग्य तथा अच्छा व्यवहार करने वाला है, वह उत्तम होता है।

३९. **ईडेन्यः नमस्यः तमांसि तिरः दर्शतः वृषा अग्निः सं इध्यते।**

(सामवेद १५३८)

जो प्रशंसनीय नमस्कार करने योग्य, अन्धकार को दूर करने वाला दर्शनीय और बलवान् है, उसका तेज बढ़ता है।

४०. **स एष एक एकवृदेक एव।**

(अथर्ववेद १३, ४.२०)

वह ईश्वर एक है और सचमुच एक ही है।

४१. **एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः**

(अथर्ववेद २.२.१)

एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य और प्रजाओं में स्तुत्य है।

४२. **तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योः।**

(अथर्ववेद १०.८.४४)

उस आत्मा को ही जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।

४३. **रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम्।**

(अथर्ववेद ७.११५.४)

पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढ़ाए, पाप की कमाई को मैंने नष्ट कर दिया है।

४४. **मा जीवेभ्यः प्रमदः।**

(अथर्ववेद ८.१.७)

शेष भाग पृष्ठ संख्या १० पर......

thearyasamaj.org

संकेत - इशारे

- सुकामा आर्या

परम पिता परमात्मा ने यह सृष्टि अत्यन्त सूझबूझ से बनाई है। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु हमें हर क्षण कुछ न कुछ संकेत करती रहती है। प्रकृति की हर क्रिया हमें कुछ न कुछ अवश्य बताती है, जीवन जीने की कला को सिखाती है।

हमें जरुरत है आँख खोलकर आसपास देखने की, इन विभिन्न प्रकार के संकेतों को समझने की और जीवन में उतारने की। हर क्षण हर एक स्थान पर प्रकृति में कुछ न कुछ क्रिया अवश्य होती रहती है- यह अलग बात है हम उसे पकड़ नहीं पाते हैं, समझ नहीं पाते हैं, उस सांकेतिक भाषा को उपेक्षित कर देते हैं। पर प्रकृति अपनी तरफ से सतत, निरन्तर हमें अपना सन्देश देती रहती है। हमें सिखाने के लिए उद्यत रहती है। यह प्रकृति परमपिता परमात्मा के सन्देशों की वाहक है। यह दृश्य काव्य है- जिसे हृदयंगम करने की आवश्यकता है।

अपने ईर्द-गिर्द देखें-

पर्वत कहता शीश उठाकर, तुम भी ऊँचे बन जाओ
सागर कहता है लहराकर, मन में गहराई लाओ
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो, कितना ही हो सर पर भार,
नभ कहता है फैलो इतना, ढक लो तुम सारा संसार।

सुबह सवेरे सूर्य की सुनहरी किरणें संकेत करती हैं कि तुम स्वयं जागो और दूसरों को भी जगाओ। अपने में उत्साह भरो और जो निरुत्साहित है उनको भी अपने संग ले चलो। हमें यह समझना है कि हम ज्ञान के प्रकाश के पुंज बनें- इस कदर धरती को आलोकित करें कि अज्ञानता का अंधेरा लेशमात्र भी इस धरा पर न रहे। हम स्वयं दीपमान हों और औरों के जीवन को भी प्रकाशित करें।

हम धुएँ को देखते हैं इसे हम नकारात्मक समझते हैं, द्वेष करते हैं, पर ध्यान से देखें तो धुएँ में भी गुण है- यह हमेशा ऊपर उठता है, ऊँची -ऊँची मंजिलों पर पहुँच जाता है। कितनी भी बाधाएँ आएँ, रुकावटें आएँ -इमारतें बीच में आएँ, यह अपना रास्ता बनाता हुआ ऊँचे आकाश में जाकर के ही दम लेता है। यह हमें संकेत करता है कि हम भी विघ्न बाधाओं की परवाह किए बिना उनका सामना करते हुए ऊँचे उठते चले जाएँ।

मल्याचल की मंद सुंगध समीर सिखाती है कि हम हमेशा गतिशील रहें, क्रियाशील रहें। गति में ही, क्रिया में ही जीवन है। हम मानव जीवन जीते हुए कर्मठ बने रहें।

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।''

हम कर्म करते हुए १०० वर्ष तक जीने की इच्छा करें। (कभी भी, किसी भी अवस्था में निष्क्रिय न हों)।

प्रकृति के संकेतों से कहीं अधिक व उत्तम संकेत ईश्वर हमारी आत्मा में बैठा हुआ करता रहता है-वह हमेशा सत्योपदेश करता है। हमें ईश्वर के इन संकेतों को समझने की आवश्यकता है। जब हम ईश्वर के संकेतों के अनुसार चलते हैं तो व्यर्थ की विघ्न बाधाओं से बच जाते हैं। अगर हम उसके संकेतों को एक बार उपेक्षित भी कर दें तो वह इतना दयालु, इतना प्रेम करता है कि हमें बार-बार संकेत करता है, बताता है कि यह मत करो। इससे तुम्हारी हानि होगी। वह सच्चे सखा की भाँति हमारा मार्गदर्शन करता रहता है। वह अपना स्नेह भाव, सद्भाव, सुहृदयता हमारे पर बनाए रखता है। उसका उद्देश्य मात्र इतना ही है कि हम शुभ कर्मों में लगे रहें व दुःखों से बचते रहें। वह हमारा मार्ग सुगम, सफल बनाना चाहता है। फिर भी जब हम अपने हठ व दुराग्रह से उसके संकेतों को उपेक्षित कर देते हैं, अपनी मन मर्जी से जीवन जीते हैं तो वह न्यायकारी होने के नाते हमें दण्ड देता है। वह भी हमारे कल्याण के लिए, हमारे हित के लिए। यह दण्ड भी रुकावट है- पाप मार्ग पर जाने से रोकने के लिए। अगर दण्ड व्यवस्था न हो तो हम बेझिझक गलत, अधर्म मार्ग पर चलते रहेंगे।

हमारे वेदों में शास्त्रों में भी कई बातें मात्र संकेत रूप में मिलती हैं उनका रूपान्तरण करना आना चाहिए, नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसके लिए आवश्यक है अन्त:करण की शुद्धता, पवित्रता, आन्तरिक सद्भाव और समानता तो ही हम ईश्वर प्रदत्त ज्ञान का सही-सही अर्थ कर सकते हैं। इसलिए हमारा अन्त:करण ठीक होना चाहिए, व्यवस्थित होना चाहिए। देने वाले ने तो दिल खोल कर दिया है, हमें अपनी पात्रता, योग्यता के आधार पर दिए हुए को सही मायने में स्वीकार करना है।

इसलिए अपने जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए, उच्च स्तर पर जीवन जीने के लिए आवश्यक है कि हम संवेदनशील बन कर अपने आस-पास व आन्तरिक स्तर पर मिलने वाले संकेतों को ठीक से समझें, उनका विश्लेषण करें जिससे हमारा अभ्युदय व नि:श्रेयस दोनों मार्ग प्रशस्त हों।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - ७७

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- अथर्ववेद में निम्नलिखित दो मन्त्र इस प्रकार से हैं-

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।
तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन्यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः।।

- अथर्ववेद १०/२/३१-३२

पहले मन्त्र में मनुष्य के शरीर की संरचना का वर्णन किया गया है। संक्षेप में, यह स्पष्ट रूप में कहा गया है कि हमारे शरीर में आठ चक्र हैं। मैं अपने अल्प ज्ञान के आधार पर यही समझता हूँ कि वेद-मन्त्र का संकेत मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र नामक आठ चक्रों पर है। इस शरीर में एक आनन्दमय कोश है जो कि आत्मा का निवास-स्थान है। इस आत्मा में जो परमात्मा विद्यमान है, ब्रह्म-ज्ञानी उसे ही जानने का प्रयास करते हैं। जहाँ तक मैंने वैदिक विद्वानों के मुखारविन्द से सुना है, ब्रह्म-रन्ध्र आनन्दमय कोश में ही विद्यमान है। उनका यह भी कथन है कि मस्तिष्क को भी हृदय कहा जाता है। मस्तिष्क की स्थिति आनन्दमय कोश में है।

जब स्तम्भवृत्ति द्वारा, श्वासों की गति को कुछ क्षणों के लिए रोक दिया जाता है तो मन के द्वारा ध्यान लगाने में सुविधा होती है। जब श्वासों को ब्रह्म-रन्ध्र की स्थिति में रोका जाए तो मन शीघ्र ही एकाग्र हो जाता है क्योंकि दोनों ही एक कोश में विद्यमान है। स्वभाविक रूप से ब्रह्मरन्ध्र (सहस्रार) में धारणा करते हुए आत्मा का अन्तःकरण के द्वारा चिन्तन करना अधिक सरल हो जाता है। वक्षस्थल के समीप जिसे व्यवहारिक भाषा में हृदय कहा जाता है, ध्यान बिखरने लगता है क्योंकि ध्यान लगाने वाला तो इस कोश में है नहीं।

ऊपर लिखित तथ्यों को ध्यान रखते हुए मेरी निम्नलिखित जिज्ञासायें हैं और प्रार्थना है कि उनका अपनी पत्रिका में यथोचित समाधान करते हुए कृतार्थ करें।

(क) अथर्ववेद में किन आठ चक्रों का वर्णन किया गया है।

(ख) इन आठ चक्रों का क्या महत्त्व है, विशेषतया ध्यान की पद्धति में?,

(ग) क्या ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करना युक्ति-युक्त नहीं? क्या यह वर्जित है?

समाधान की प्रतीक्षा में,

- रमेश चन्द्र पहूजा, प्रधान, आर्यसमाज मॉडल टाऊन, यमुनानगर

समाधान- आज अध्यात्म के नाम पर अनेक भ्रान्तियाँ चल रही हैं। यथार्थ में अध्यात्म क्या है? इसको प्रायः लोग समझते ही नहीं। बिना समझे अध्यात्म के नाम पर भ्रान्ति में जीवन जी रहे होते हैं। आत्मा-परमात्मा के विषय को अधिकृत करके विचार करना उसके अनुसार जीना अध्यात्म है। ठीक-ठीक वैदिक सिद्धान्तों को समझना उनको आत्मसात करना उनके अनुसार अपने को चलाना अध्यात्म है। यह अध्यात्म तनिक कठिन है। इस कठिनता भरे अध्यात्म को अपनाने के लिए साहस और पुरुषार्थ की आवश्यकता है। प्रायः आज का व्यक्ति पुरुषार्थ से बचना चाहता है इसलिए उसको सरल मार्ग चाहिए। यम-नियम आदि के बिना ही कुण्डलिनी जाग्रत कर मोक्ष चाहता है। इन कुण्डलिनी आदि के साथ चक्रों के चक्र में भी घुमने लगता है।

महर्षि दयानन्द ने हमें विशुद्ध अध्यात्म का परिचय ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका उपासना विषय, मुक्ति विषय में व सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ७ व ९ में तथा अध्यात्म से ओतप्रोत ग्रन्थ आर्याभिविनय में करवा दिया है। महर्षि के इस अध्यात्म में कुण्डलिनी और चक्रों की कोई चर्चा नहीं है। महर्षि दयानन्द ने हठयोग प्रदीपिका पुस्तक को अनार्ष ग्रन्थ माना है और ये कुण्डलिनी आदि उसी अनार्ष ग्रन्थ की देन है। न ही सांख्य आदि शास्त्र में इनका वर्णन है। ऋषियों के ग्रन्थों में तो यमनियामादि के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर उस ज्ञान से मुक्ति कही है न कि कुण्डलिनी जागरण से। अस्तु।

अथर्ववेद के जो मन्त्र आपने उद्धृत किये हैं उन मन्त्रों के आर्ष भाष्य उपलब्ध नहीं हैं, अन्य विद्वानों के भाष्य उपलब्ध हैं। जो भाष्य उपलब्ध हैं उन विद्वानों का मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वान् प्रचलित चक्रों की बात करते हैं कुछ नहीं। जो प्रचलित चक्रों को मानते हैं वे इन्हीं चक्रों परक अर्थ करते हैं और जो नहीं मानते वे चक्र का अर्थ आवर्तन घेरा आदि लेते हुए शरीर में स्थित ओज सहित अष्ट धातुओं का जो वर्णन है उसको लेते हैं अथवा अष्टाङ्ग

thearyasamaj.org

योग को लेते हैं। ये विद्वानों की अपनी मान्यता है। यथार्थ में मन्त्र में आये अष्ट चक्र में कौनसे आठ चक्र कहे हैं, यह निश्चित नहीं हैं। हमें अधिक संगत अष्ट धातु परक अर्थ लगता है, फिर भी यह अन्तिम नहीं है।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन काल में तन्त्रादि ग्रन्थों को भी पढ़ा था। उन तन्त्र ग्रन्थों में शरीर रचना विशेष की बातें लिखी थी। उन पुस्तकों में कई पुस्तकों का विषय नाड़ीचक्र था। महर्षि ने शव परीक्षण भी किया था जो उन नाड़ीचक्र आदि विषय वाली पुस्तकों के अनुसार खरा नहीं उतरा अर्थात् नाड़ीचक्र आदि वहाँ कुछ नहीं मिला। उससे ऋषि का और अधिक दृढ़ निश्चय आर्ष ग्रन्थों पर हुआ। वर्तमान के चिकित्सकों को भी ये चक्र कुण्डलिनी नहीं मिले हैं। जब ये चक्र हैं ही नहीं तो इनकी ध्यान में उपयोगिता भी कैसी? ध्यान में उपयोगी अपना शुद्ध व्यवहार, सिद्धान्त की निश्चितता, वैराग्य, यम-नियमादि योग के अंग हैं। इनको कर व्यक्ति अच्छी प्रकार ध्यान कर सकता है अन्यथा तो शरीर के चक्रों में ही लगा रहेगा।

हाँ मन्त्र में आये अष्टचक्र से यदि अष्टधातु शरीर में स्थित रसादि सात और आठवाँ ओज लिया जाता है तो निश्चित रूप से इनका महत्त्व है।

आपने पूछा क्या ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करना युक्ति युक्त नहीं? क्या यह वर्जित है? इस पर हमारा कथन कि महर्षि पतञ्जली जी ने योगदर्शन में 'धारणा' के लिए कहा है, धारणा की परिभाषा करते हुए महर्षि ने सूत्र बनाया '**देशबन्धश्चित्तस्य धारणा**' अर्थात् चित्त का शरीर के एक देश (स्थान) विशेष पर बान्धना (स्थिर) करना धारणा है। इस सूत्र का भाष्य करते हुए महर्षि व्यास ने कुछ स्थानों के नाम गिनाये हैं

नाभिचक्रे, हृदयपुण्डरीके, मूर्ध्नि, ज्योतिषि, नासिकाग्रे, जिह्वाग्र इत्येवमादिषु देशेषु....धारणा।

अर्थात् नाभी, हृदय, मस्तक, नासिका और जिह्वा के अग्रभाग आदि देश में मन को स्थिर करना। यहाँ मुख्यरूप से मन को एक स्थान पर रोकने की बात कही है वह स्थान कोई भी हो सकता है, ब्रह्मरन्ध्र भी ऋषि के कथन से तो हमें यह प्रतीत नहीं हो रहा कि ध्यान करने के लिए ब्रह्मरन्ध्र विशेष स्थान है और अन्य स्थान सामान्य है। हाँ यह अवश्य प्रतीत हो रहा है कि सभी स्थान अपना महत्त्व रखते हैं। उनमें चाहे नासिकाग्र, जिह्वाग्र हो अथवा ब्रह्मरन्ध्र। यह वर्जित भी नहीं है कि ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान नहीं करना चाहिए, ब्रह्मरन्ध्र में मन टिका कर ध्यान किया जा सकता है।

आपने विद्वानों से सुना है कि ब्रह्मरन्ध्र आनन्दमय कोश में रहता है। मस्तिष्क को हृदय कहा जाता है। मस्तिष्क की स्थिति आनन्दमय कोश में है। आपने जो विद्वानों से सुना है कि हृदय मस्तिष्क है अथवा मस्तिष्क में है यह ऋषि के प्रतिकूल कथन है। हमने कई बार जिज्ञासा समाधान में ऋषि कथनानुसार हृदय स्थान का वर्णन किया है। अब फिर कर रहे हैं 'जिस समय..... परमेश्वर करके उसमें प्रवेश किया चाहें, उस समय इस रीति से करें कि कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में और उदर के ऊपर जो हृदय देश है। जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाश रूप स्थान है.......।' ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका इतना स्पष्ट कथन होते हुए भी मस्तिष्क को हृदय कहना, ऋषि मान्यता को न मानना है। इसी हृदय प्रदेश में ध्यान करने वाला आत्मा रहता है। यहाँ पर ठीक-ठीक किया गया ध्यान बिखरेगा नहीं अपितु अधिक-अधिक ध्यान लगेगा।

इसलिए ध्यान उपासना को अधिक बढ़ाने के लिए महर्षि दयानन्द ने जो उपासना पद्धति विशेष बताई है उसके अनुसार चले चलावें इसी से अधिक लाभ होगा। और जो ऋषि मान्यता से विपरीत अन्य विद्वानों के विचार हैं उसको छोड़ने में ही लाभ है। ऋषि मान्यता के विपरीत चाहे कितने ही बड़े विद्वान् की बात क्यों न हो वह हमारे लिए मान्य नहीं है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

विद्वानों को अपनी शिक्षा से कुमार ब्रह्मचारी और कुमारी ब्रह्मचारिणियों को परमेश्वर से ले के पृथिवी पर्य्यन्त पदार्थों का बोध कराना चाहिये कि जिससे वे मूर्खपनरूपी बन्धन को छोड़ के सदा सुखी हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.८

इस संसार में माता-पिता, बन्धुवर्ग और मित्रवर्गों को चाहिये कि अपने सन्तान आदि को अच्छी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य करावें जिस से वे गुणवान् हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.९

thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. पुरोहितों की आवश्यकता- आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग), अलीगढ़, उ.प्र. की मुख्य आर्य संस्था है। इस संस्था द्वारा वेद-प्रचार का कार्य सुचारू रूप से प्रारम्भ कर दिया गया है। वेदों एवं आर्यसमाज के नियमों एवं उनके उद्देश्यों को जन-जन में पहुँचाने हेतु चार शिक्षित एवं वेद-विद्वान् आर्य पुरोहितों की और आवश्यकता है। इनके अतिरिक्त एक अनुभवी ढ़ोलक वादक भी चाहिये। वेतन योग्यतानुसार एवं निवास की संस्था परिसर में व्यवस्था है।

सम्पर्क- ०९४१२६७१५५४, ०९५५७४०८५६५

२. गुरुकुल प्रारम्भ- वैदिक जन शिक्षा उत्थान समिति, दल्हेड़ी, बड़गाँव, सहारनपुर, उ.प्र. द्वारा सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में सुशिक्षित प्राचार्य एवं आचार्यों के सहयोग से वैदिक सिद्धान्तों और अत्याधुनिक शिक्षा का अद्भुत सामञ्जस्य 'वैदिक गुरुकुल दल्हेड़ी' का संचालन प्रारम्भ हो चुका है। जिसका मूल उद्देश्य राष्ट्र के लिए ऐसी पीढ़ी तैयार करना है, जो राष्ट्र को सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बना सके, जो संस्कारयुक्त, भयमुक्त समाज का निर्माण कर, महर्षि स्वामी दयानन्द के सपनों के भारत का निर्माण करें। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र- ९७५८५००२७०, ९४६६९३६२५५

३. आचार्या की आवश्यकता- कन्या गुरुकुल नवलपुर, बिजनौर के लिए एक सुयोग्य आचार्या की आवश्यकता है। गुरुकुल में रहने व खाने की समुचित व्यवस्था है। गुरुकुल में वर्तमान स्थिति में दस-बारह कन्याएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं तथा आचार्या सविता प्राचार्य के पद पर हैं। आने वाली आचार्या को उचित वेतन व उचित सुविधा दी जायेगी, प्रार्थीगण कन्या गुरुकुल को आर्ष पद्धति से ही चलाना चाहते हैं।

सम्पर्क- ०९८३७९६२६२१, ९३६८६९७२४७

४. वैद्य की आवश्यकता- महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास, बुलन्दशहर, उ.प्र. में विगत लम्बे समय से आयुर्वेदिक धर्मार्थ चिकित्सालय प्रभावी ढंग से चल रहा है। इस औषधालय के लिए वैदिक धर्मी योग्य एवं अनुभवी वैद्य की आवश्यकता है। इच्छुक वैद्य सम्पर्क करें।

सम्पर्क - ०९५३६७५४६८९

५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल के पर्वतीय प्रवेश द्वार पर स्थित रामनगर जहाँ १८७६ में महर्षि दयानन्द पधारे थे। आर्यसमाज का ८९वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार कार्यक्रम दिनांक ७ से ९ नवम्बर २०१४ तक हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा व मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार थे, करनाल से पधारी उपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या ने अपने सुमधुर भजन व उपदेशों से सभी श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। वयोवृद्ध भजनोपदेशक पं. जयप्रकाश आर्य ने भी ओजस्वी वाणी में भजनोपदेश प्रस्तुत किए।

६. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज नरवा, पीताम्बरपुर का २४वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेदप्रचार का कार्यक्रम दिनांक ११ से १२ अक्टूबर को प्राथमिक विद्यालय नरवा पीताम्बरपुर के प्रांगण में उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रात: ८ से ११ बजे तक यज्ञ, प्रवचन एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम था। अपराह्न ३ से ५ बजे तक विविध सम्मेलन एवं सायं ८ से ११ बजे तक भजनोपदेश एवं प्रवचन का कार्यक्रम था।

७. वार्षिकोत्सव मनाया- ८ से ११ नवम्बर २०१४ तक आर्यसमाज लोहिया नगर, शाहजादपुर, जि. अम्बेडकर नगर, उ.प्र. का वार्षिकोत्सव बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। अनेक वर्षों से आर्य जनों की इच्छा थी कि कुछ नये युवा आर्यों के कन्धों पर संस्था का उत्तरदायित्व सौंपा जावे। इस बार जब पुनर्गठन हुआ तो नए उमंग व उत्साह से वार्षिकोत्सव का आयोजन हुआ। प्रतिदिन ३ सभायें होती थी पर रात्रि के सत्र में अधिक संख्या होती रही। भजनोपदेशक श्री संदीप वैदिक मुज्जफ्फरनगर से तथा सुश्री प्रियंका भारती-भरतपुर राज., श्री राममगन जी-गुरुकुल धनपतगंज, सुल्तानपुर ने मधुर भजनों व उपदेशों से जनता का मन मोह लिया। मुख्य वक्ता होशंगाबाद मध्यप्रदेश के आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी रहे।

८. वार्षिकोत्सव- गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोलाझाल, मेरठ का वार्षिकोत्सव माघ कृष्ण नवमी, वि.सं. २०७१, बुधवार १४ जनवरी २०१५ को प्रात: ९ से सांय ५ बजे तक होगा। जिसमें १३ जनवरी २०१५ को वेद संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। वेदगोष्ठी का विषय **वैदिक वाङ्मय में देवता** रखा गया है। शोधगोष्ठी में प्रस्तुत किये गये सभी स्तरीय लेख अन्तर्राष्ट्रीय मानक पत्रिका **पावमानी** में प्रकाशित किये जाते हैं।

thearyasamaj.org

९. **सम्मान समारोह**- अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर थाइलैण्ड से लौटकर आने के उपलक्ष्य में आर्यसमाज हाथीखाना राजकोट के महामन्त्री श्री रणजीतसिंह परमार का स्वागत सम्मान दिनांक १६ नवम्बर २०१४ को सायं पारिवारिक सत्संग में यज्ञोपरान्त किया गया।

१०. **वार्षिकोत्सव सम्पन्न**- आर्यसमाज शहर, बड़ा बाजार, सोनीपत, हरि. के ९८वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर चार दिवसीय कार्यक्रम में अजमेर से मूर्धन्य वैदिक विद्वान् डॉ. धर्मवीर जी ने मुण्डकोपनिषद् की कथा के माध्यम से अपने सरल, सारगर्भित प्रवचनों द्वारा जनसामान्य को ईश्वर के सच्चे स्वरूप से परिचित कर शुद्ध उपासना का सन्देश दिया। वैदिक सिद्धान्त मर्मज्ञ पं. रामचन्द्र जी ने सच्चे ईश्वर पुत्र यानि आर्य, श्रेष्ठ, गतिशील बनने की प्रेरणा के साथ-साथ अपने जीवन आहूत करने वाले आर्य बलिदानी, क्रान्तिकारियों, ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने वाले विद्वानों, आर्य संन्यासियों के प्रेरक संस्मरण भी प्रस्तुत किये। युवा विद्वान् और चिकित्सक डॉ. वरुण शर्मा जी ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से अपने भोजन को सात्विकता की ओर मोड़ने तथा तामसिक आहार से ऊपर उठकर स्वयं को स्वस्थ बनाए रखने की प्रेरणा की। फरीदाबाद से युवा आर्य भजनोपदेशक पं. प्रदीप जी आर्य ने मनोहारी भजनोपदेशों से लाभन्वित किया।

११. **स्थापना दिवस मनाया**- महिला आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर, राज. ने अपना २०वाँ स्थापना दिवस सामवेद पारायण यज्ञ में आहुतियों के साथ मनाया। १३ से १६ नवम्बर तक आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद, म.प्र. के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने वैदिक मन्त्रों की सुग्राह्य व्याख्या की। वेदपाठ जयपुर की बहनों (श्रीमती सुमति व श्रुति शास्त्री) द्वारा हुआ। इस दौरान मुजफ्फरनगर के भजनोपदेशक पं. सन्दीप ने भजनोपदेशों से सरसता बिखेरी।

१२. **बलिदान समारोह**- आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव तथा आर्यसमाज शिवाजी नगर गुड़गाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का ८८वाँ बलिदान समारोह १९ से २१ दिसम्बर २०१४ को बड़े समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भाषण प्रतियोगिता, भजन सन्ध्या, श्रद्धाञ्जलि तथा विशाल शोभा यात्रा नगर के विभिन्न स्थलों से चलकर समारोह भीमनगर आर्यसमाज में सम्पन्न हुआ।

१३. **शिविर**- आर्यवीर दल, राजस्थान का शाखानायक एवं आर्य वीर श्रेणी का प्रान्तीय योग-व्यायाम प्रशिक्षण व व्यक्तित्व निर्माण शिविर का आयोजन २४ से ३१ दिसम्बर २०१४ तक चेतन विद्या मन्दिर, उ.मा. विद्यालय, शास्त्री सर्कल, सुमेरपुर, पाली, राजस्थान में आयोजित किया जा रहा है।

सम्पर्क सूत्र- ०२९३३-२५८१४९, २५८९७९

१४ **वेद प्रचार सम्पन्न**- आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान में आर्यसमाज पटियाला द्वारा दिनांक १८ से २३ नवम्बर २०१४ तक बड़ी धूमधाम से वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् महात्मा चैतन्य मुनि, साध्वी सत्यप्रिया यति के साथ मुख्य प्रवक्ता के रूप में, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक सतीश सुमन व राजेन्द्र आर्य विशेष रूप से पहुँचे। इस समारोह में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

वैवाहिक

१५. **वर चाहिये**- आर्यसमाज परिवार व प्रतिष्ठित व्यवसायी परिवार की सुन्दर, संस्कारित पुत्री जन्म अक्टूबर १९९१, कद-५ फीट ३ इंच, वर्ण-गौरवर्ण, शिक्षा-बी.टेक, एम.बी.ए., निवासी राजस्थान के लिए आर्यसमाजी परिवार का वर चाहिए।-**सम्पर्क-०७०२३८५६६११**

ई-मेल - ndhswa@gmail.com

१६. **वधू चाहिये**- आर्यवन, रोजड़ और ऋषि उद्यान, अजमेर से जुड़े हुए युवक चिन्तन रामी, उम्र ३० साल, कद-५.९ फीट, वर्ण-गेहुंआँ, शिक्षा-एम.बी.ए., व्यापार-प्रॉपर्टी लेन-देन, निवास-जजेज बंगलो रोड, अहमदाबाद-३८००१५ (गुज.) के लिए आर्यसमाजी परिवार की, अध्यात्म में रुचि रखने वाली, वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने की इच्छुक, घरेलू कन्या चाहिए।-**सम्पर्क-०९८२४९०८०८५**

ईमेल-chintan_success1@yahoo.co.in

शोक समाचार

१७. आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् ओमवीरसिंह (सेवानिवृत्त प्राचार्य शिक्षा विभाग, राज.) की पत्नी श्रीमती मिथिलेश कुमारी (ए-२९, शिवपुरी, एयरपोर्ट, सांगानेर, जयपुर, राज.) का दि. १७/११/२०१४ को सायं सन्ध्या करते हुए देहावसान हो गया। इनका अन्त्येष्टि संस्कार व शुद्धि यज्ञ पूर्ण वैदिक विधान के साथ सम्पन्न कराया गया।

चुनाव समाचार

१८. आर्यसमाज नरवा पीताम्बरपुर के चुनाव में प्रधान- श्री दिनेश मिश्र, मन्त्री- श्री कृष्णमोहन मिश्र, कोषाध्यक्ष- श्री राम सजीवन जायसवाल को चुना गया।

thearyasamaj.org

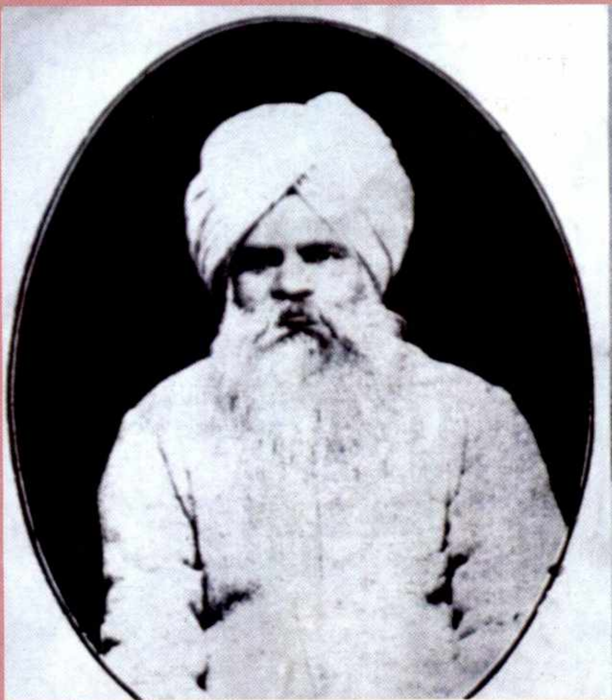

स्वामी श्रद्धानन्द के दादा
श्री लाला गुलाबराय

स्वामी श्रद्धानन्द के पिता
श्री लाला नानकचन्द

संन्यास पूर्व
स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द के परिवार का चित्र

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ दिसम्बर, २०१४ ३९५९/५९

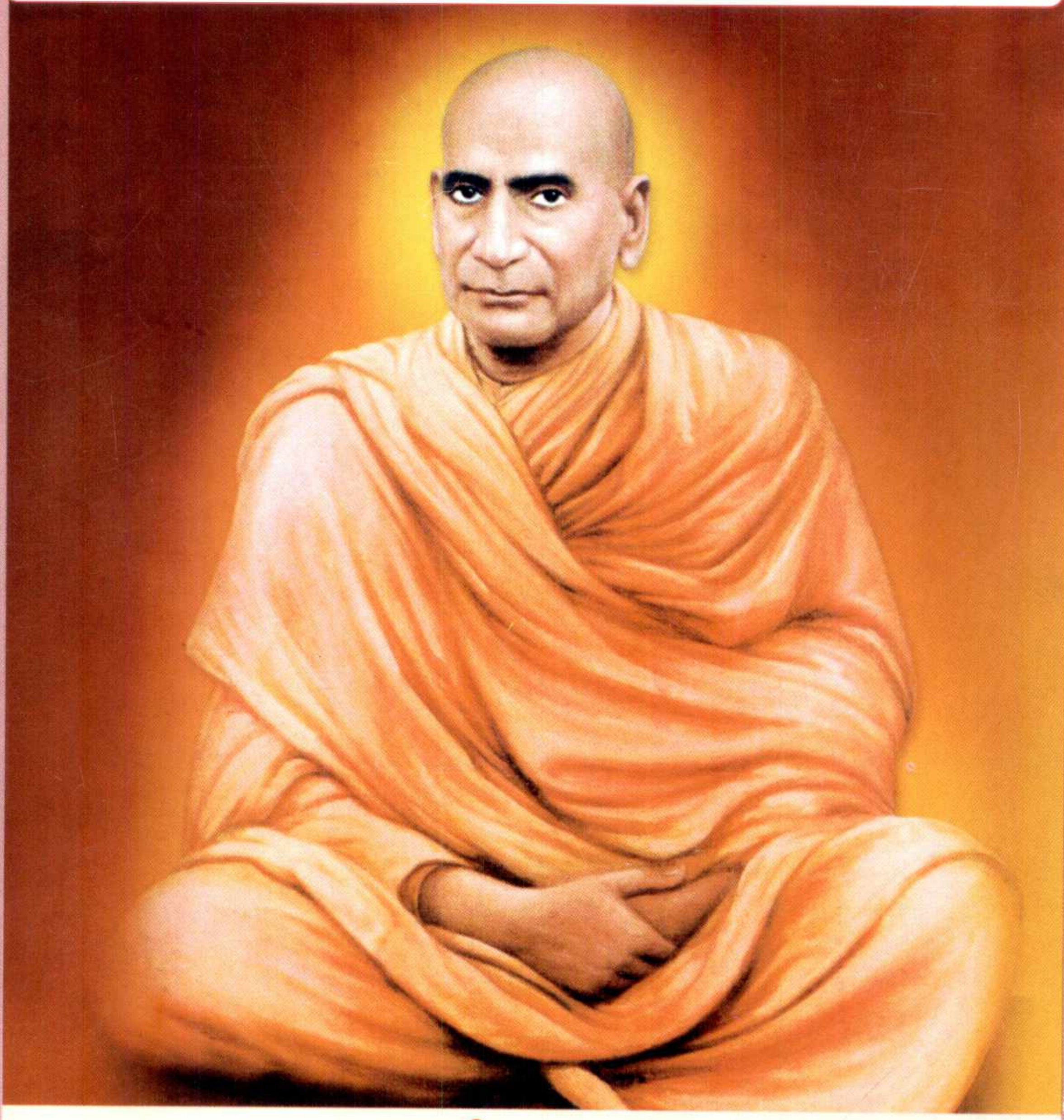

स्वामी श्रद्धानन्द

बलिदान दिवस के अवसर पर समस्त ऋषि भक्तों की भावभीन श्रद्धाञ्जलि।

विशेष विवरण पृष्ठ१९ पर देखें।

Design@ MITTAL 9829797513

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१